

Akhbaar Ke Baare mein Suwal Jawab (Gujarati)



અખ્બાર કે બારે મેં સુવાલ જવાબ

- દુન્યા કા સબ સે પહલા અખ્બાર
- અખર મા'લૂમ કરને કી નિરાલી હિકાયત
- ગિરિકતાર શુદા ચોર કી અખર લગાના કેસા ?
- અખ્બાર પઢના કેસા ?
- દહ્શત ગઢી કી વારિદાત કી અખર છાપને કે નુક્સાનાત

શીખે તરીકત, સમીરે અહલે સુન્નાત, બાનિયે દા'વતે ઇસ્લામી, હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ

મુહમ્મદ ઇબ્લાસ અત્તાર કાદિરી ૨-ઝવી مستند كاتبة

مكتبة المدينة
(1434 هـ)

અખ્બાર કે બારે મેં સુવાલ જવાબ

યેહ રિસાલા (અખ્બાર કે બારે મેં સુવાલ જવાબ)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરત અલલામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી ઝિયાઈ رَبِّكَ كُنْهُمُ الْغَالِبِينَ ને ઉર્દૂ ઝબાન મેં તહરીર ફરમાયા હૈ.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી) ને ઈસ રિસાલે કો ગુજરાતી રસ્મુલ ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ કિયા હૈ ઔર મક-ત-બતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા હૈ. ઈસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાએં તો મજલિસે તરાજિમ કો (બ ઝરીએ મક્તૂબ, ઈ-મેઈલ યા SMS) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાબિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી)

મક-ત-બતુલ મદીના

સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને, તીન દરવાજા,

અહમદઆબાદ-1, ગુજરાત, ઈન્ડિયા

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

કિયામત કે રોઝ હસરત

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : સબ સે ઝિયાદા હસરત કિયામત કે દિન ઉસ કો હોગી જિસે દુન્યા મેં ઈલ્મ હાસિલ કરને કા મૌકઅ મિલા મગર ઉસ ને હાસિલ ન કિયા ઔર ઉસ શખ્સ કો હોગી જિસ ને ઈલ્મ હાસિલ કિયા ઔર દૂસરોં ને તો ઉસ સે સુન કર નફઅ ઉઠાયા લેકિન ઈસ ને ન ઉઠાયા (યા'ની ઉસ ઈલ્મ પર અમલ ન કિયા).
(તારિખ ડમશ્ક લા બિન દુસાક્રાજ ૧૦૧ વ ૩૮૧ ડારાલફકરીયોત)

કિતાબ કે ખરીદાર મુ-તવજ્જેહ હોં

કિતાબ કી તબાઅત મેં નુમાયાં ખરાબી હો યા સફહાત કમ હોં યા બાઈન્ડિંગ મેં આગે પીછે હો ગએ હોં તો મક-ત-બતુલ મદીના સે રુજૂઅ ફરમાઈયે.

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

कुछ इस रिसाले के बारे में.....

आलमी म-दनी मर्कज कैजाने मदीना के 2-मजान हॉल में 6 जुमादल उफ़रा 1433 सि.हि. (28.4.12) जुमुअे और हफ़ते की दरमियानी शब एलेक्ट्रॉनिक मीडिया और पेपर मीडिया के सहाइकियों और दीगर मु-तअद्लिकीन का म-दनी मुजा-करा हुवा जो रात गअे तक जारी रहा, अेक सहाइकी ने म-दनी मुजा-करे में जब के अेक और ने म-दनी येनल को दिये जाने वाले तअस्सुरात में (जिसे म-दनी येनल पर दी जाने वाली द्वा'वते इस्लामी की "म-दनी अुअरें" के अन्दर में ने अपनी कियाम गाह पर सुना) सहाइत के हवाले से रहनुमाई से मु-तअद्लिक रिसाला शाअेअ करवाने का मुता-लबा किया. मेरा भी पहले ही से रिसाला पेश करने का जेहून था और इस जिम्न में मेरे पास सुवालन जवाअन काई मवाह मौजूद था, जो के अनाम "अप्पार के बारे में सुवाल जवाब" आप के हाथों में है. अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ इस के मुअद्लिक व उ-लमाअे मुक़त्तिशीन को जजाअे पैर अता इरमाअे और सहाइकियों, अप्पार अीनों और जुम्ला मुसल्मानों की दून्या व आअिरत के लिये नफ़अ अफ़श अनाअे.

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ

तालिअे गमे मदीना व
अकीअ व मअिअरत व
अे अिसाअ जअनुल
इरदौस में आका
का पओस



6 शा'अानुल मुअअअम 1433 सि.हि.
27-6-2012

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अपभार के बारे में सुवाल जवाब

शैतान लाभ सुस्ती दिलाये येह रिसाला पूरा पढ
लीजिये. إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ. गुनाहों से बचने का उल्हन बनेगा.

दुर्द शरीफ़ की इमीलत

मदीने के सुल्तान, रडमते आ-लमिथ्यान, सरवरे जीशान,
मडबूबे रडमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने अ-उमत निशान
है : जिसे कोई मुश्किल पेश आये उसे मुज पर कसरत से दुर्द पढना
याहिये क्यूंके मुज पर दुर्द पढना मुसीबतों और बलाओं को टालने
वाला है.

(الْقَوْلُ الْبَدِيعِ ص ٤١٤، بستانُ الواعظين للجوزي ص ٢٧٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सहाइत की ता'रीफ़

सुवाल : “सहाइत” की क्या ता'रीफ़ है ?

जवाब : सहाइत का लइज “सडीफ़ा” से निकला है जिस के लु-गवी
मा'ना हैं : “किताब या रिसाला”. बडर डाल अ-मलन अक

करमाने मुस्तकاً صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुइद पाक पढा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रकमतें बेजता है. (स्)

अर्सअे दरअज से “सडीफ़ा” से मुराद अैसा मत्बूआ मवाद है जे मुकरररा वकफ़ों के बा’द शाअेअ होता है युनान्थे ँस मफ़हूम में “अब्बार” और “माहनामों” को भी शामिल किया जा सकता है. “सहाफ़त”, किसी भी मुआ-मले के बारे में तहकीक और फ़िर उसे सौती, अ-सरी (या’नी सुनने, दैअने) या तहरीरी शकल में अडे पैमाने पर कारिधन (या’नी पढने वाले), नाज़िरीन या सामिधन तक पछोंयाने के अमल का नाम है. وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَرَسُولُهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ -

मौजूदा सहाफ़त की दो किस्में

सुवाल : सहाफ़त की कितनी किस्में हैं ?

जवाब : आज कल सहाफ़त दो हिस्सों में मुन्कसिम है : (1) प्रिन्ट भीडिया या’नी तआअती व ँशाअती जराधअे ँब्लाग. अब्बारात, रसाधल वगैरा. (2) ँलेकट्रॉनिक भीडिया. या’नी अर्की जराधअे ँब्लाग. रेडियो, टीवी, ँन्टर नेट वगैरा.

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

दुन्या का सभ से पहला अब्बार

सुवाल : क्या आप अता सकते हैं के दुन्या में सभ से पहला अब्बार कहां से और कौन सा निकला ?

जवाब : अब्बार की तारीख अहुत पुरानी है, अेक अन्दाजे के मुताबिक 104 सि.ध. में यीन के अन्दर कागज की ँजाद हुध, सभ से

करमाने मुस्तकी: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: श्री शम्भू मुञ्ज पर दुर्दे पाक पठना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (ज़रान)

पहला छापखाना (Printing Press) वहीं बना और एक तकरीक के मुताबिक सब से पहला मन्बूआ अब्जार भी यीन ही में बनाम “गज़िट टीपाव” (या’नी महल की ज़रि) ज़री हुवा. ज़रि अज़ीम पाक व हिन्द के पहले उर्दू अब्जार का नाम “जामे ज़ां नुमा” है जिस का सने ईशाअत मार्य 1822 ई. है.

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَرَسُوْلُهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ—

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

पुढकुशी की ज़रि

सुवाल : सुना है आप “पुढकुशी” की वारिदात की ज़रि अब्जार में शाअेअ करने से ईप्तिलाफ़ रभते हैं ?

जवाब : मअ नाम व पहयान पुढकुशी करने वाले मुसल्मान की ज़रि की ईशाअत यूके भिलाफ़े शरीअत है ईस लिये ईस अन्दज़ पर आने वाली ज़रि से ईप्तिलाफ़ है. ईस ज़िम्न में तब्लीगेदुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक, “दा’वते ईस्लामी” के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मन्बूआ 505 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, “गीबत की तबाह कारियां” सफ़हा 192 का ईक्तिबास मुदा-हज़ा डो : इत शुदा लोगों की ज़राई करना भी गीबत है, बा’ज़ अवकात ज़ा सब्र आज़मा मुआ-मला होता है. म-सलन डाकू, दहशत गर्द, अपने अज़ीज़ के कातिल वगैरा कत्ल कर दिये ज़अें या उन्हें इंसि लगा दी ज़अे तो कई लोग (मकतूलीन की जे सबब मज़म्मत कर के) गीबत के गुनाह में पड ही ज़ते हैं. ईसी तरह पुढकुशी करने वाले मुसल्मान के बारे में भिला ईज़ाज़ते शर-ई येह कड देना के “कुलां ने पुढकुशी की” येह गीबत है. लिहाज़ा नाम व पहयान

करमाने मुस्तफ़ा، صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दे पाक न पढा तउकीक
 वोह बढ भप्त हो गया. (उंउं)

के साथ किसी मुसल्मान की **भुदकुशी** की **अब्बार** में **जबर** भी न लगाई जाये के इस से मरने वाले की **गीबत** भी होती और इस के साथ साथ **मईम** के अहलो ईयाल की ईज़्ज़त पर भी **बट्टा** लगता है. (और अगर **जबर** लगाई **म-सलन** “हुलां ने हुलां को कतल कर के” या “जूआ में **बडी** रकम **हार** कर **भुदकुशी** कर ली” तो ऐसी **जबर** से **मईम** के **भुदकुशी** करने से **कबल** का **अैब** भी **भुलता** है जो के **जबर** लगाने वालों के **हक** में **दो गीबतों** या’नी **गुनाह** **दर गुनाह** का **बाईस** **बनता** है. **बलके** **ईस** **तरह** की **जबरों** की **ईशाअत** से **مَوَدَّةَ اللَّهِ ﷻ** गुनाहों और **अजाबों** की **कसरत** का **अन्दाजा** लगाना **ही** **मुश्किल** है **क्यूंके** **अब्बार** के **जरीअे** ऐसी **जबरें** **हजारों** **लाजों** **अफ़राद** **तक** **पहोंयती** हैं. **لَا،** **ईस** **अन्दाज** में **तजक़िरा** **किया** (या **अब्बार** में **जबर** **लगाई**) **के** **पढने** या **सुनने** वाले **भुदकुशी** करने वाले को **पहयान** **ही** न **पाये** के **वोह** **कौन** **था** तो **हरज** **नहीं** **मगर** **येह** **जेहन** में **रहे** के **नाम** न **लिया** **मगर** **गाँउ,** **महल्ला,** **बरादरी,** **अवकात,** **भुदकुशी** का (सबब व) **अन्दाज** **वगैरा** **बयान** करने से **भुदकुशी** करने वाले की **शनाअत** **मुश्किन** है, **लिहाजा** **पहयान** **हो** **जाये** **ईस** **अन्दाज** में **तजक़िरा** **भी** **गीबत** में **शुमार** **होगा.** **मस्अला** **येह** **है** **के** **मुसल्मान** **भुदकुशी** करने से **ईस्लाम** से **आरिज** **नहीं** **हो** **जाता** **ईस** **की** **नमाजे** **जनाजा** **भी** **अदा** **की** **जायेगी,** **ईस** **के** **लिये** (ईसाले **सवाब** और) **दुआअे** **मग़ि़रत** **भी** **करेंगे.** **मरने** **वाले** **मुसल्मान** **को** (पवाह **उस** **ने** **भुदकुशी** **ही** **की** **हो**) **बुराई** से

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुबुह और दस भरतबा शाम दुइदे पाक पढा।
(उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (रुतबे))

याद करने की शरीअत में एज्जत नहीं. इस जिम्न में दो
इरामीने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ मुला-हजा हों : **﴿1﴾**
 अपने मुर्दों को बुरा न कडो क्यूंके वोह अपने आगे भेजे
 हुअे आ'माल को पडोंय युके हें. (बुखारी ज १०० ६७० ६१३ १३९३)
﴿2﴾ अपने मुर्दों की पूबियां बयान करो और उन की बुराईयों
 से बाज रहो. (तिरमिडी ज २ ३१२ ३१२ १०२१)
 मुहम्मद अब्दुर्रिउफ़ मनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي لِیْلِیْلِهِ : मुर्द
 की गीबत जिन्दे की गीबत से बढतर है, क्यूंके जिन्दा शप्स
 से मुआफ़ करवाना मुश्किन है जब के मुर्दा से मुआफ़ करवाना
 मुश्किन नहीं. (फ़िषुसु अल्लुमिनायु ज १ १०६ १०६ १०६ १०६)

पहलूओं से गोशत काट कर भिलाने का अजाब

प्यारे सडाई ईस्लामी भाईयो ! अद्लाह عَزَّوَجَلَّ गीबत की
 नुडूसत से हम सबी की डिफ़ाजत इरमाअे. आमीन. जब
 किसी अेक ईर्द के सामने गीबत करना भी आप्भिरत के
 लिये तबाह कुन है तो उन अप्भारों के जिम्मेदारों का क्या
 अन्जाम होग़ा ज़े के घर घर गीबतें पडोंयाते और लाभों
 लाभ अइराद को गीबतों भरी भभरें पढाते हें ! भुदारा !
 कभी अपनी ना तुवानी पर तन्डाई में गौर कीजिये के
 हमारी डालत तो येह है के मा'भूली पारिश भी बरददशत
 नहीं डोती, नाभुन का मा'भूली यर्का (या'नी डलका सा
 थीरा) भी सडा नहीं ज़ता तो अगर गीबत कर के बिगैर
 तौबा किये भर गअे और अजाबे एलाही में इंस गअे तो क्या

करमान मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (مبارزين)

बनेगा ! गीबत के मुप्तलिक़ डोलनाक अजाबात में से अक़ अजाब मुला-डजा डो, इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : जिस रात मुझे आस्मानों की सैर कराई गई तो मेरा गुजर अक़ अैसी कौम पर हुआ जिन के पडलूओं से गोशत काट कर भुद उन ही को भिलाया जा रहा था. उन्हें कहा जाता : भाओ ! तुम अपने त्माईयों का गोशत भाया करते थे. मैं ने पूछा : अै जिभ्रईल येड कौन हैं ? अर्ज की : येड लोगों की गीबत किया करते थे. (دلائل النبوة للبيهقي ج ٢ ص ٣٩٣، تنبيه الغافلين ص ٨٦).

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَرَسُوْلُهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ-

कर ले तौबा रब की रहमत है बडी

कध्र में वरना सजा डोगी कडी

(वसाईले बज्शिश, स. 667)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

पुदकुशी में नाकाम रहने वालों की जबरें

सुवाल : पुदकुशी की नाकाम कोशिश करने वालों की जबरों के मु-तअद्लिक आप क्या कहते हैं ?

जवाब : बिला मस्लडते शर-ई नाम व पडयान के साथ किसी मुसल्मान की अैसी जबर शाअेअ करना गुनाह है के यकीनन ईस में न सिई अक़ मुसल्मान की बडके उस के सारे जानदान की रुस्वाई और बदनामी का सामान है. पेशगी मा'जिरत के साथ अर्ज है : अद्लाह न करे आप में से किसी सडाई या अप्पार के मालिक या मुदीर या किसी T.V. येनल के डायरेक्टर

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરૂદ શરીફ પઢેગા મેં કિયામત કે દિન ઉસ કી શફાઅત કરૂંગા. (કૌબરાલ)

કે ઘર મેં ખુદકુશી કી કોઈ (કામ્યાબ યા) નાકામ “વારિદાત” હો જાએ તો વોહ કયા કરેગા ? યકીનન આપ ફરમાએંગે કે વોહ યેહ સાનિહા ઘુપાને ઔર ઈસ કી ખબરે વહ્શત અસર કી ઈશાઅત રુકવાને કે લિયે અપના પૂરા ઝોર સર્ફ કર દેગા ! દુન્યા મેં ઈઝ્ઝત ઔર આખિરત મેં જન્નત કે તલબ ગાર પ્યારે સહાફિયો ! ઈસી તનાઝુર મેં આપ કો દૂસરે મુસલ્માનોં કી ઈઝ્ઝત કા ભી સોચના ચાહિયે. “બુખારી શરીફ” મેં હૈ : હઝરતે સય્યિદુના જરીરِ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કહતે હૈં : “મેં ને રસૂલુલ્લાહ وَسَلَّم وَآلِهِ وَسَلَّمَ નમાઝ પઢને, ઝકાત દેને ઔર હર મુસલ્માન કી ખૈર ખ્વાહી કરને પર બૌઅત કી.” (بخاری ج ۱ ص ۳۰ حدیث ۵۷) આ’લા હઝરત ફરમાતે હૈં : “હર ફર્દે ઈસ્લામ કી ખૈર ખ્વાહી (યા’ની ભલાઈ ચાહના) હર મુસલ્માન પર ફર્ઝ હૈ.” (ફતાવા ર-અવિયા, જિ. 14, સ. 415) મુફસ્સિરે શહીર હકીમુલ ઉમ્મત હઝરતે મુફ્તી અહમદ યાર ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰنُ ફરમાતે હૈં : જિસ મુસલ્માન કી ગીબત કી જા રહી હો, ઉસ કી ઈઝ્ઝત બચાને વાલે કો ફિરિશ્તા પુલ સિરાત પર પરોં મેં ઢાંપ કર ગુઝારેગા તાકે દોઝખ કી આગ કી તપિશ ઉસ તક ન પહોંચ પાએ. (મિરઆત, જિ. 6, સ. 572 મુલખખસન)

وَاللَّهُ أَعْلَمُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم -

ગમે હયાત અભી રાહતોં મેં ઢલ જાએ

તેરી અતા કા ઈશારા જો હો ગયા યા રબ

(વસાઈલે બખ્શિશ, સ. 96)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : मुज़ पर दुर्रदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (अबू-यूसुफ़)

मारे जाने वाले डाकूओं की मज्मत

सुवाल : आप ने “गीबत की तबाह कारियां” के ईक्तिबास में तो डाकूओं, दहशत गर्दों वगैरा जिन्हों ने लोगों का सुकून बरबाद कर के रभ दिया है उन के कत्ल हो जाने या फ़ंसी लग जाने के बा’द उन की भी मज्मत करने से मन्अ कर दिया !

जवाब : मैं ने हर सूरत को मन्अ नहीं किया और न ही अपनी तरफ़ से मन्अ किया, सिर्फ़ हुक़्मे शरीअत बयान किया है, ज़ो मुसल्मान वाकेई योर या डाकू थे और अपने कैफ़रे किरदार को पड़ोय गये अब हो सके तो उन के लिये दुआआ भेजिये की जाये, उन को बिगैर सहीह मक़सद के हरगिज़ बुरा लला न कहा जाये के अहादीसे मुभा-रका में अपने मुर्दों को बुराई के साथ याद करने की मुभा-न-अत है, बल्के वोह जिन्हा हों उस वक़्त भी बिला मस्लहत शर-ई उन्हे बुरा लला कहने की ईजाज़त नहीं, मज्मत की मु-तअदद सूरतों में से बा’ज ना जाईज सूरतें हमारे ज़माने में येह भी हैं के महुज़ टाईम पास करने, गपें मारने, बुराई बयान करने या महुज़ अेक ज़बन बनाने के तौर पर मज्कूर बाला अज़राह को बुरा कहा जाता है, हां, अप्पार वाले अगर ईस नित्यत से औसों की मज्मत लरी ज़ापें ताके इन के अन्जाम से मुसल्मानों को ईब्रत हासिल हो तो जाईज बल्के कारे सवाब है. وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَرَسُوْلُهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ -

वोह इस वक़्त ज़न्नत की नहरों में गोते लगा रहा है

दा’वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मन्बूआ 505 सफ़हात पर मुश्तभिल किताब, “गीबत की

करमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जडा भी डा मुज पर दुर्रद पढो क तुम्हारा दुर्रद मुज तक पढोयता है. (ब्रान)

तभाड कारियां” सइडा 191 पर “सु-नने अबू दावूद” के हवाले से मरकूम है : हजरते सय्यिदुना अबू हुरैरा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फरमाते हैं : माईज अस्लमी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को जब रजम किया गया था, (या'नी जिना की “हद” में ईतने पथर मारे गअे के वफ़ात पा युके थे) दो शप्स आपस में भातें करने लगे, अेक ने दूसरे से कडा : ईसे तो देओ के अद्लाड عَزَّوَجَلَّ ने ईस की पर्दा पोशी की थी मगर ईस के नफ़स ने न छोडा, رَجِمَ رَجْمَ الْكَلْبِ या'नी कुत्ते की तरह रजम किया गया. हुजुरे पुरनूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सुन कर सुकूत फरमाया (या'नी आमोश रहे). कुछ देर तक चलते रहे, रास्ते में मरा हुवा गधा भिला जो पाउं फैलाअे हुअे था. सरकारे वाला तभार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन दोनों शप्सों से फरमाया : जाओ ईस मुदरि गधे का गोशत आओ. उन्हों ने अर्ज की : या नबिय्यद्लाड صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! ईसे कौन आओगा ! ईशरूद फरमाया : वोह जो तुम ने अपने त्माई की आबड़ रेजी की, वोह ईस गधे के आने से भी जियादा सप्त है. कसम है उस की जिस के हाथ में मेरी जान है ! वोह (या'नी माईज) ईस वक्त जन्नत की नहरों में गोते लगा रहा है.

(ابوداؤد ج ٤ ص ١٩٧ حديث ٤٤٢٨)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَرَسُوْلُهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ -

तू मरने वाले मुसल्मां को मत भुरा कडना

“तू बे हिसाब, ईसे बप्श, या भुदा” कडना

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

करमाने मुस्तकी : صلى الله تعالى عليه و اله وسلم : जिस ने मुज पर दस भरतभा दुरेद पाक पढा अल्लाह उस पर सो रलमतें नाजिल करमाता है. (अ. ७)

योर डाकू की गिरिफ्तारी की खबरें देना

सुवाल : जो योर या डाकू पकडे गये अप्यार में उन की खबर लगाने के मु-तअद्लिक आप क्या कहते हैं ?

जवाब : अव्वल तो येह देष लिया जाये के जो पकडे गये वोह वाकेई योर या डाकू हैं बी या नहीं ! खडारे शरीअत जिहद 2 सईहा 415 पर मरखला नम्बर 2 है : “योरी के सुबूत” के दो तरीके हैं : अक येह के योर जुद ईकरार करे और ईस में यन्द बार की हाजत नहीं सिई अक बार (का ईकरार) काई है दूसरा येह के दो मर्द गवाही दें और अगर अक मर्द और दो औरतों ने गवाही दी तो कत्ब (या’नी हाथ काटने की सजा) नहीं मगर माल का तावान दिलाया जाये और गवाहों ने येह गवाही दी के (हम ने योरी करते नहीं देषा इकत) हमारे सामने (योरी का) ईकरार किया है तो येह गवाही काबिले अे’तिबार नहीं. गवाह का आजाद होना शर्त नहीं (या’नी गुलाम की गवाही बी यहां मकबूल है).

(दُرُْمُفْتَارُ رَدِّ الْمُحْتَارِ ج १ ص १३४) हुवुम येह के पकडे जाने वालों की खबर लगाने में मरलहते शर-ई देषी जाये. उमूमन खबरें लगाने में कोई सहीह मक्सद पेशे नजर नहीं होता नीज शर-ई सुबूत की बी परवाह नहीं की जाती बस यूं ही “खबर बराअे खबर” छापने की तरकीब कर दी जाती है, जभी तो बारहा अैसा होता है के जिस को बतौरे “मुजरिम” अप्यारों में ખૂब उछाला गया बा’द में वोही “बा ईज्जत बरी” बी हो गया ! तो जिस का योर, डाकू, ખાઈन या ठग (Cheater) वगैरा होना शरअन साबित न हो उस को “मुजरिम” करार देना ही गुनाह है ये जाअेके उसे अप्यार में बतौरे मुजरिम मुश्तहर कर के लाખों

करमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरद शरीफ़ न पड़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (ज़िरीय)

लोगों में जलीलो प्वार कर देना ! यकीनन येह अेक बहुत बडा गुनाह है और इस में उस मुसल्मान बढेके उस के पूरे प्मानदान की सप्त बे ँज़्ज़ती और शदीद ँजा व दिल् आज़ारी का सामान है.

तूने योरी की (हिकायत)

प्यारे सडाई ँस्लामी भाँयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप की और मेरी आबर्ज़ महकूज़ रभे, पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ हमें योरी करने और किसी मुसल्मान पर योरी का ँल्काम धरने से बयाअे. आमीन. बे सोये समजे सुनी सुनाँ भात में आ कर किसी मुसल्मान को योर कहना या लिप देना आसान नहीं. ँस जिम्न में मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत मुला-हजा हो : युनान्ये हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : अल्लाह के महबूब, दानाअे गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने आलीशान है : हज़रते ँसा ँब्ने मरयम ने अेक शप्स को योरी करते देभा तो उस से फ़रमाया : “سَرَفْتُ” या’नी “तूने योरी की.” वोह बोला : “हर्गिज़ नहीं, उस की कसम जिस के सिवा कोँ मा’बूद नहीं.” तो (हज़रते) ँसा ने फ़रमाया : - اَمَنْتُ بِاللّٰهِ وَكَذَّبْتُ نَفْسِيْ - और मैं ने अपने आप को सुटलाया.

(मुस्लिम से १२८८ हदीथ २३१८) मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार प्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن उस कसम प्माने वाले को छोड देने के मु-तअद्लिक हज़रते सय्यिदुना ँसा रूहुदलाह عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के फ़रमान की वज़ाहत करते हुअे तहरीर फ़रमाते हैं : या’नी ँस

इरमाने मुस्तक़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोड़ मुज़ पर दुइदुई पाक न पड़े. (एम)

कसम की वजह से तुझे सख्खा समजता हूँ के मोमिन बन्द अद्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की जूटी कसम नहीं जा सकता, (क्यूँके) उस के दिल में अद्लाह के नाम की ता'जीम होती है, अपने मु-तअद्लिक गलत इहमी का जयाल कर लेता हूँके मेरी आंभों ने देजने में ग-लती की. (मिरआत, जि. 6, स. 623) और इमाम न-ववी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ؓ इस उददीस के तइत इरमाते हैं: “कलाम का जाहिर येह है के मैं ने अद्लाह तआला की कसम जाने वाले की तस्दीक की और उस का योरी करना जो मेरे सामने जाहिर हुवा, मैं ने इस को जुटलाया. (वजाहत येह है के) शायद उस शप्स ने वोड़ खीज ली थी जिस में उस का हक था या इस ने गस्ब का कस्द नहीं किया था या उजरते इसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को जाहिरि तौर पर यूं मइसूस हुवा के उस शप्स ने हाथ बढा कर कोई खीज ली (या'नी युराई) है लेकिन जब उस ने उदक़ दिया (या'नी कसम जाई) तो आप عَلِيٌّ نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने अपना गुमान साकित कर दिया और उस गुमान से रुजूअ कर दिया.” (شرح مسلم للروى ج 1 ص 112)

अद्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़्दिरत हो.

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

وَاللَّهُ أَعْلَمُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ -

है मोमिन की इज्जत बडी खीज यारो !

बुराई से उस को न हरगिज पुकारो

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

કરમાને મુસ્તફા ﷺ : جلى الله تعالى عليه و آله و سلم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ द्वा सो बार दुइद पाक पढा उस के द्वा सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क़ुरआन)

गिरिफ्तार शुदा योर की ખબર लगाना कैसा ?

सुवाल : જો શખ્સ બતૌરે ચોર યા ડાકૂ શનાપ્ત કર લિયા ગયા હો ઉસ કી ખબર અખ્બાર મેં લગાઈ જા સકતી હૈ યા નહીં ?

જવાબ : શર-ઈ સુબૂત હાસિલ હો જાને કી સૂરત મેં ભી યેહ ગૌર કર લીજિયે કે ઈસ કી ખબર અખ્બાર મેં “ખબર બરાએ ખબર” છાપ રહે હૈં યા કોઈ અચ્છી નિચ્ચત ભી હૈં ! મ-સલન બતૌરે ચોર મુશ્તહર હોને પર ઉસ કી હોને વાલી ઝિલ્લત સે દૂસરે લોગ ઈબ્રત હાસિલ કરેં નીઝ આયન્દા કે લિયે ઈસ બદ કામ સે મોહતાત ભી હો જાએં ઈસ નિચ્ચત સે ચોરી કી ખબર કી ઈશાઅત કી જા સકતી હૈ. ચોર અગર્યે બહુત બુરા બન્દા હૈ મગર બિગૈર કિસી શર-ઈ મસ્લહત કે ઉસ કી તઝ્લીલ વ તશ્હીર જાઈઝ નહીં, ક્યૂંકે ચોર હોને કે બા વુજૂદ બ હૈંસિચ્ચતે મુસલ્માન ઉસ કી હુરમત બાકી હૈ. હાં જિતની શરીઅત કી તરફ સે તશ્હીર વ તઝ્લીલ કી ઈજાઝત હૈ ઉતની કી જા સકતી હૈ, ઈસ સે ઝાઈદ નહીં યા’ની યેહ નહીં કે અબ ﷺ जिस की भरजी हो जब याहे गीबत करता रहे ! ફી ઝમાના અખ્બાર વાલોં કે પાસ શર-ઈ સુબૂત કી ઈતિલાઅ કે મો’તમદ (યા’ની કાબિલે એ’તિમાદ) ઝરાએઅ હોતે હૈં યા નહીં ઈસ કો સહાફી સાહિબાન ખૂબ સમઝ સકતે હૈં. નીઝ જિસ અન્દાઝ મેં ઔર જિસ તરકીબ સે ખબરેં લેતે હૈં ઉસ મેં યેહ ભી ગૌર કિયા જાએ કે કાનૂન કી રૂ સે ઈસ કી ઈજાઝત ભી હૈ યા નહીં. હર મુસલ્માન કી અપની અપની જગહ ઈજાઝત વ હુરમત હૈ, સભી કો ચાહિયે કે એહતિરામે મુસ્લિમ કા લિહાઝ રખેં. સુ-નને ઈબ્ને માજહ મેં હૈ : ખા-તમુલ મુર-સલીન,

ਫ਼ਰਮਾਨੇ ਮੁਸਤਫ਼ਾ ﷺ : صَلَّي اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ਮੁਠ ਪਰ ਟੁੜੇਦ ਸ਼ਰੀਫ਼ ਪਠੋ ਅਲਲਾਹੁ ਏਤੁਮ ਪਰ ਰੁਠਮਤ ਭੇਯੇਗਾ।

(ਅੰਬਰੂਨ)

ਰੁਠਮਤੁਲਿਲ ਆ-ਲਮੀਨ ﷺ ਨੇ ਕਾ'ਭਐ ਮੁਅਜ਼ਮਾ ਸੇ ਮੁਖਾਤਿਭ ਓ ਕਰ ਈਸ਼ਾਦਿ ਫ਼ਰਮਾਯਾ : ਮੋਮਿਨ ਕੀ ਫੁਰਮਤ (ਯਾ'ਨੀ ਈਜ਼ਤ ਵ ਆਭੜ) ਤੁਠ ਸੇ ਯਿਯਾਏ ਹੈ।

(ਅੰਬਰੂਨ ਮਾਯੇ ੬ ਜ ੩੧੯ ਚਿਠਿ ੩੯੨)

ਯੋਰ ਸੇ ਭਟ ਕਰ ਮੁਯਰਿਮ

ਯਿਸ ਕੇ ਯਠਾਂ ਯੋਰੀ ਫੁਏ ਉਸ ਕੋ ਭੀ ਯਾਢਿਯੇ ਕੇ ਯਵਾਠ ਮ ਯਵਾਠ ਫੁਰ ਐਕ ਪਰ ਸੁਭਾ ਕਰਤਾ ਔਰ ਤੋਠਮਤ ਧਰਤਾ ਨ ਫ਼ਿਰੇ ਯੈਸਾ ਕੇ ਆਯ ਕਲ ਅਕਸਰ ਐਸਾ ਓ ਰਠਾ ਹੈ ਮ-ਸਲਨ ਧਰ ਮੇਂ ਕੋਏ ਯੀਠ ਯੋਰੀ ਓ ਯਾਤੀ ਹੈ ਤੋ ਕਭੀ ਭੇ ਕੁਸੂਰ ਭਠੂ ਮੁਠਠਮ ਓਤੀ ਯਾ'ਨੀ ਤੋਠਮਤ ਕੀ ਠਏ ਮੇਂ ਆਤੀ ਹੈ ਤੋ ਕਭੀ ਭਾਵਯ ਕੀ ਸ਼ਾਮਤ ਆਤੀ ਹੈ ਯਾ ਧਰ ਕੇ ਨੋਕਰ ਪਰ ਭਿਯਲੀ ਗਿਰਾਏ ਯਾਤੀ ਹੈ ਢਾਢਾਂਕੇ ਕਿਸੀ ਕੇ ਭਾਰੇ ਮੇਂ ਸ਼ਰ-ਏ ਸੁਭੂਤ ਤੋ ਏਰ ਕਨਾਰ ਭਸਾ ਅਵਕਾਤ ਕੋਏ ਵਾਠੇਠ ਕਰੀਨਾ ਭੀ ਨਠੀ ਓਤਾ ! ਢਿਠਾਠਾ ਸਭੀ ਕੋ ਏਸ ਰਿਵਾਯਤ ਸੇ ਏਭੁਰ ਢਾਸਿਲ ਕਰਨੀ ਯਾਢਿਯੇ ਯੈਸਾ ਕੇ ਫ਼ਰਮਾਨੇ ਮੁਸਤਫ਼ਾ ﷺ : صَلَّي اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ਵੋਠ ਸ਼ਯਸ ਯਿਸ ਕਾ ਮਾਲ ਯੋਰੀ ਫੁਵਾ, ਢਮੇਸ਼ਾ ਤੋਠਮਤ (ਢਗਾਨੇ) ਮੇਂ ਰਠੇਗਾ ਯਠਾਂ ਤਕ ਕੇ ਵੋਠ ਯੋਰ ਸੇ (ਭੀ) ਭਠਾ ਮੁਯਰਿਮ ਭਨ ਯਾਏਗਾ।

(ਫ਼ਿਤਾਵਾ ੨-ਠਵਿਯਾ, ਯਿ. 24, ਸ. 109, ੧੭੦੭ ਚਿਠਿ ੨੯੭, ੧੭੦੭ ਚਿਠਿ ੨੯੭)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَرَسُولُهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ -

ਸੁਨੂੰ ਨ ਫ਼ੋਢੁਸ਼ ਕਲਾਮੀ ਨ ਗੀਭਤੋ ਯੁਗਲੀ

ਤੇਰੀ ਪਸਨਏ ਕੀ ਭਾਠੇਂ ਫ਼ਕਤ ਸੁਨਾ ਯਾ ਰਭ

(ਵਸਾਏਢੇ ਭਯਿਸ਼ਿਸ਼, ਸ. 93)

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ ! صَلَّي اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

करमान मुस्तफ़ा: عليه السلام : मुज़ पर कसरत से दुरुद पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुरुद पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मङ्कित है. (मुज़)

मुलाम का नाम छापना कैसा ?

सुवाल : जो मुलाम पकडे जाते हैं उन के नाम मअ पहयान अब्बार में छापे जा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : यहां गीबत के जवाब की उभूमी शराहत के साथ दो बातें और हैं, अव्वलन येह के महुज़ एलाम न हो बल्के सुबूते शर-ई हो या'नी उस का मुजरिम होना कानूनन साबित हो युका हो, दूसरा येह के जुर्म औसा हो के उस की तशहीर से अवामुन्नास को झायेदा हो, या'नी जैसे बा'ज अवकात महुज़ जाती मुआ-मलात होते हैं और उन पर गिरिफ्तारी हो जाती है, एन मुआ-मलात का अवाम के साथ कोई तअद्लुक नहीं होता तो उन की तशहीर की हरगिज एजाजत नहीं. मजकूरा बावा तफ़सील से वाजेह हो गया के बा'ज सूरतों में अब्बार में नाम मअ पहयान देने की एजाजत है और बा'ज में नहीं क्यूंके इस से उन को और उन के पानदान वालों को सप्त अजियत होगी. किसी की गिरिफ्तारी अगर जुल्मन महुज़ पानापुरी या किसी एन्तिकामी कारवाई के जिम्न में की गई हो तब तो गिरिफ्तारी भी सप्त गुनाह व हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है. और गिरिफ्तारी का हुक्म जारी करने वाला, गिरिफ्तार करने वाला वगैरा जो भी उस मजलूम की गिरिफ्तारी में जान भूज कर शरीक हुअे सभी गुनहगार और अजाबे नार के हकदार हैं. नीज आबितअे ता'जीराते पाकिस्तान की दफ़आत 499 से 502 के तहत "येह लोग भुद काबिले गिरिफ्तारी मुजरिम" ठहरते हैं.

मुसल्मान की जे हम्मती कबीरा गुनाह है

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती एदारे मक-त-बतुल मदीना

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जो मुज़ पर अक दुइद शरीक़ पढता है अल्लाह उंस के लिये अक कीरात अज लिखता है और कीरात उहुद पडाउ जितना है. (मुराज़)

की मत्बूआ 505 सफ़्हात पर मुशतमिल किताब, “गीबत की तबाह कारियां” सफ़्हा 58 ता 59 का अक लरजा भैज ईक़्तिबास मुला-हजा हो जो के भौक़े फ़ुदा रभने वालों के लिये निहायत ही ईब्रत अंगेज है युनान्हे रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने आलीशान है : बेशक किसी मुसल्मान की नाहक बे ईज़्जती करना कबीरा गुनाहों में से है. (अबुदाउद ६ ज ६३ ص ३०३ حدیث ६८७७)

फ़ुदा व मुस्तफ़ा को ईजा देने वाला

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो! हकीकत येह है के अक मुसल्मान अपने दूसरे मुसल्मान भाई की ईज़्जत का मुहाफ़िज़ है मगर अफ़सोस ! अैसा नाज़ुक दौर आ गया है के अब अकसर मुसल्मान ही दूसरे मुसल्मान भाई की ईज़्जत के पीछे पडा हुवा है जो भर कर गीबतें कर रहा है और युग़लियां जा रहा है, बिला तकल्लुफ़ तोह्मतें लगा रहा है, बिला वजह हिल हुआ रहा है, दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-भतुल मदीना के मत्बूआ रिसाले, “जुल्म का अन्जाम” सफ़्हा 19 ता 20 पर है : हुक्कुल ईबाद का मुआ-मला बडा नाज़ुक है मगर आह ! आज कल बेबाकी का दौर दौरा है, अवाम तो कुजा भवास कलवाने वाले भी उमूमन ईस की तरफ़ से गाड़िल रहते हैं. गुस्से का मरज़ आम है ईस की वजह से अकसर “भवास” भी (बिला ईजाजते शर-ई) लोगों (को अक दम जाउ देते और उन) की हिल आज़ारी कर बैठते हैं और ईस की तरफ़ उन की बिदकुल तवज्जोह नहीं छोती के

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : જિસ ને કિતાબ મેં મુઝે પર દુરુદ પાક લિખા તો જબ તક મેરા નામ ઉસ મેં રહેગા ફિરિશ્તે ઉસ કે લિયે ઈસ્તિઝ્કાર કરતે રહેંગે. (طرائف)

કિસી મુસલ્માન કી બિલા વજહે શર-ઈ દિલ આઝારી ગુનાહ વ હરામ ઓર જહન્નમ મેં લે જાને વાલા કામ હૈ. મેરે આકા આ'લા હઝરત رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْہِ इतावा २-ઝવિયા શરીફ જિલ્દ 24 સફહા 342 પર ત-બરાની શરીફ કે હવાલે સે નકલ કરતે હૈં : સુલ્તાને દો જહાન صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم કા ફરમાને ઈબ્રત નિશાન હૈ : مَنْ اَذَى مُسْلِمًا فَقَدْ اَذَانِي وَمَنْ اَذَانِي فَقَدْ اَذَى اللّٰهِ. (યા'ની) જિસ ને (બિલા વજહે શર-ઈ) કિસી મુસલ્માન કો ઈઝા દી ઉસ ને મુઝે ઈઝા દી ઓર જિસ ને મુઝે ઈઝા દી ઉસ ને અલ્લાહ અલ્લાહ (الْمُعْجَمُ الْاَوْسَطُ ج 2 ص 387 حديث 3607) કો ઈઝા દી. (عَزَّ وَجَلَّ) વ રસૂલ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم કો ઈઝા દેને વાલોં કે બારે મેં અલ્લાહ (عَزَّ وَجَلَّ) પારહ 22 સૂ-રતુલ અહૂઝાબ આયત 57 મેં ઈશાદ ફરમાતા હૈ :

اِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ
وَاَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِیْنًا ﴿٥٢﴾

તર-જ-મએ કન્ઝુલ ઈમાન : બેશક જો ઈઝા દેતે હૈં અલ્લાહ (عَزَّ وَجَلَّ) ઓર ઉસ કે રસૂલ કો ઉન પર અલ્લાહ (عَزَّ وَજَلَّ) કી લા'નત હૈ દુન્યા વ આખિરત મેં ઓર અલ્લાહ (عَزَّ وَજَلَّ) ને ઉન કે લિયે ઝિલ્લત કા અઝાબ તખ્યાર કર રખા હૈ.

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَرَسُولُهُ اَعْلَمُ عَزَّ وَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم۔

ગુનાહ બે અદદ ઓર જુર્મ ભી હેં લા તા'દાદ

કર અફવ સહ ન સફૂંગા કોઈ સઝા યા રબ

(વસાઈલે બખ્શિશ, સ. 93)

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

કરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : جيس نے मुज पर अेक बार दुइडे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रहमतें भेजता है. (स्म)

દહ્શત ગર્દી કી વારિદાત કી ખબર છાપને કે નુક્સાનાત

સુવાલ : દહ્શત ગર્દી કી વારિદાતોં કી ખબરેં છાપને કે મુ-તઅલ્લિક આપ કી ક્યા રાય હૈ ?

જવાબ : અગર મેરી ઝાતી રાય મા'લૂમ કરના મક્સૂદ હૈ તો અર્ઝ હૈ કે દહ્શત ગર્દી કી વારિદાતોં કી ખબરેં છાપને મેં કોઈ ભલાઈ નહીં, ઉલટા મુ-તઅદદ નુક્સાનાત હેં મ-સલન ઈસ સે ખ્વાહ મ ખ્વાહ ખૌફો હિરાસ ફૈલતા હૈ, નીઝ જઝબાતી ઔર મુજરિમાના ઝેહ્નિયત કે કઈ નાદાન ઈન્સાન મારઘાડ પર ઉતર આતે, ખૂબ અસ્લહા ચલાતે, ગોલિયાં બરસાતે, મકાનોં ઔર દુકાનોં, બસોં ઔર કારોં વગૈરા કી તોડફોડ મચાતે, ગાડિયાં જલાતે, લૂટમાર મચાતે ઔર અપને વતને અઝીઝ કી ઈમ્લાક નઝરે આતશ કર કે દર હકીકત અપને હી પાઉ પર કુલહાડે ચલાતે હેં ઔર યૂં દહ્શત ગર્દી કી મૈલી મુરાદેં બર આતી હેં કે અક્સર દહ્શત ગર્દી કે ઝરીએ ઈન કા મક્સદ હી બદ અમ્ની ફૈલાના હોતા હૈ ઔર સિતમ ઝરીફી યેહ હૈ કે બા'ઝ ઝરાઈએ ઈબ્લાગ ખૂબ મિર્ય મસાલે લગા કર તખ્રેબ કારિયોં કી ખબરેં ચમકા કર ઈસ મુઆ-મલે મેં દહ્શત ગર્દી કે ખ્વાહી ન ખ્વાહી મુઆવિન સાબિત હોતે બલકે એક દૂસરે સે બઢ ચઢ કર ગોયા મદદગાર બનતે હેં ઔર કરાઈન સે ઐસા લગતા હૈ કે દો ચાર આમ અફરાદ કી હલાકતોં પર મબ્ની ખબર ઈન કે નઝદીક ખાસ કાબિલે તવજજોહ હી નહીં હોતી ! કોઈ અહમ લીડર મારા જાએ, ઢેરોં લાશે ગિરેં, ગૈર મા'મૂલી નુક્સાન હો, ખૂબ હંગામે હોં, જગહ બ જગહ ગાડિયાં જલાઈ જા રહી હોં, શહૂર બન્દ પડા હો જભી

કરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : જો શપ્સ મુઝ પર દુરુદે પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (જૂઠાં)

ખૂબ સન્સની ખૈઝ સુખિયાં (Headings) લગતીં ઔર ઠીકઠાક અખ્બાર બિકતે હેં.

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ ورسولہٗ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم۔

યાદ રખો ! વોહી બે અકલ હે અહમક હે જો

કસ્તે માલ કી યાહત મેં મરા જાતા હે

(વસાઈલે બખ્શિશ, સ. 126)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ

દહ્શત ગર્દી કી ખબર અખ્બાર કી જાન હોતી હે

સુવાલ : દહ્શત ગર્દી કી ખબર તો અખ્બાર કી જાન હોતી હૈ, આજ કલ અખ્બાર બિકતા હી ઈસ તરહ કી ખબરોં સે હે. કયા દહ્શત ગર્દી કી ખબર દેના જાઈઝ હી નહીં ?

જવાબ : મેં ને જવાઝ વ અ-દમે જવાઝ (યા'ની જાઈઝ ઔર ના જાઈઝ હોને) કી બાત નહીં કી, અપની ઝાતી રાય કે મુતાબિક ઈસ તરહ કી ખબરોં કે ઉન મન્ફી અ-સરાત (Side Effects) કી જાનિબ તવજજોહ દિલાને કી સમ્મ્ય કી હૈ, જિન કા આમ મુશા-હદા હૈ, ઔર હર ઝી શુઊર મુસલ્માન عَزَّوَجَلَّ اللّٰهُ تَعَالٰی سے ઈત્તિફાક કરેગા. મેરે નાકિસ ખયાલ મેં અગર દહ્શત ગર્દિયોં ઔર ઈશ્તિઆલ અંગેઝ ખબરોં કી દુન્યા ભર મેં ઈશાઅત બન્દ હો જાએ તો દહ્શત ગર્દિયાં ભી કાફી હદ તક દમ તોડ જાએં ! ઈન્સિદાદે તખ્રેબ કારી કે ઈદારે બેશક ફરૂઆલ રહેં ઔર દુશમનોં પર કડી નઝર રખેં. અવામ કો અગર્યે સન્સની ખૈઝ ખબરોં સે અકસર દિલચસ્પી હોતી હૈ મગર ઈસ મેં ઉન કા અપના કોઈ ફાએદા નહીં, બસ એક “ફુઝૂલ મૌઝૂઅ”

इरमाने मुस्तफी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइद पाक न पढा तलकीक वोह बढ भप्त हो गया. (उज्ज)

हाथ आ जाता है, बेकार बातों, कियास आराध्यों
 धन्तिजामिया पर तन्कीदों और तोहमतों वगैरा का
 सिखिसला यल निकलता है ! दुन्या के जिन ममादिक में
 इस तरह की दाखिली वारिदातों की तशहीर पर पाबन्दी
 है वहां न हउतालें होती हैं न हंगामे, वोह पुर अम्न भी
 हैं और दुन्यवी अतिबार से तरककी की राहों पर गामजन
 भी. अगर ऐसी जबरों की धशाअत न करने में उम्मत का
 कोई बहुत जडा नुकसान नजर आता हो और सवाब का
 बहुत जडा जभीरा हाथ से निकलता महसूस होता हो तो
 सहाई लजरात मेरी तफहीम इरमाअें, मैं अपने मौकिफ
 पर اِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ नजरे सानी कर लूंगा. नीज सहाई लजरात
 भी “जमानत जप्त” या “अम्बार की धशाअत पर
 पाबन्दी” का बाधस बनने वाले कानूने मत्बूआत व सहाईत
 के ज़ाबितअे ता’जीराते पाकिस्तान की दफ्आ 24 के तहत
 आने वाले 15 जराधम में से शिक नम्बर 3 और 6 पर गौर
 इरमा लें. (शिक नम्बर 3) तशदुद या जिन्स से तअद्लुक
 रपने वाले जराधम की ऐसी इदाद जिस से गैर सिद्धत
 मन्दाना तजरसूस या नकल का जयाल पैदा होने का धम्कान
 हो (शिक नम्बर 6) अम्ने आम्मा में जलल डालने की कोशिश.

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَرَسُولُهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ۔

सरफ़राज और सुर्ष-उ मौला

मुज को तू रोजे आभिरत इरमा

(वसाधले जग्शिश, स. 113)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

करमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुइदें पाक पढा अल्लाह उस पर दस रउमतें लेजता है. (स्म)

सहाइत की आजादी

सुवाल : आप की बातों से अैसा लगता है के आप सहाइत की आजादी से मुत्तफ़िक नहीं !

जवाब : मैं उर उस “आजादी” से गैर मुत्तफ़िक हूं जो “आभिरत की बरबादी” का बाईस हो, मैं ईस वक्त मुसल्मानों से मुजातिब हूं और जो सहाइती मुसल्मान हैं उन पर फुद ही शरीअत की तरफ़ से पाबन्धियां आईद हैं, वोह मन मानी करने के लिये “आजाद” ही कब हैं ! हां ता’मीरे कौम व भिद्वत के लिये शरीअत के दाअरे में रह कर बेशक वोह भूब अपना कलम ईस्ति’माव करें. ई नफ़िसही सहाइत कोई भुरी यीज़ भी नहीं, सहाइत का सब से बडा उसूल सख्याई है, सहाइत ही पर सहाइत की ईमारत ता’मीर हो सकती है. हमारी तारीफ़ में अैसे बे शुमार सहाइतियों के नाम भौजूद हैं जिन को हम आज भी सलाम करते और उन के कारनामों की कद्र करते हैं. वोह बेबाक थे, उक गो थे, दियानत दार थे, उन का लिफ़ा हुवा अेक अेक उई गोया अनभोल हीरा होता था जिसे वोह कौम की नज़र करते थे.

“अच्छे बर्ये घर की बात बाहर नहीं किया करते !”

भीठे भीठे सहाइती ईस्लामी भाईयो ! अल्लाह तआला हम सब को अकले सलीम की ने’मत ईनायत इरमाअे. आमीन. भा शुउिर लोग अपने बर्यों को शुइअ ही से येह ता’लीम देते हैं के देफ़ो बेटा ! “अच्छे बर्ये घर की बात बाहर नहीं किया करते.” मगर भा’ज अम्बारात का

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शपस मुज पर दुइदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (برق)

किरदार एस मुआ-मले में नादान बच्चों से भी गया गुजरता होता है, बस जो खबर हाथ लगी, छाप दी, अब याहे एस से नस्वी फ़सादात को हवा मिले याहे विसानी फ़सादात को, याहे एस से कोई ज़म्मी हो या किसी की लाश गिरे, ज्वाह एस से किसी का घर तबाह हो या याहे अपना वतने अजीज़ ही दाव पर लग जाओ. कैसी ही राजदारी की खबर क्यूं न हो, आज़ादिये सहाइत के नाम पर छापनी ज़रूर है, गोया हर तरह की हर खबर की ईशाअत ही आज़ादिये सहाइत है ! हर समजदार आदमी येह बात जानता है के हर बात हर किसी को नहीं बताई जाती. फिर जब आदमी ज़बानी बात करता भी है तो वोह दस बीस या पचास सो तक पड़ोयती होगी मगर अब्बार भीनी करने वालों की ता'दाद लाभों में होती है और दोस्त दुश्मन सभी पढ़ते हैं. काश ! बोलने से पड़ले तोलने और छापने से पड़ले नापने का जेह्न बन जाओ. काश ! ओ काश ! येह उद्दीसे पाक हर मुसल्मान सहाइकी डिर्जे जान बना ले जिस में मेरे प्यारे प्यारे आका मककी म-दनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने खिदायत निशान है : “जब तू किसी कौम के आगे वोह बात करेगा जिस तक उन की अकलें न पड़ोयें तो ज़रूर वोह उन में किसी पर इतना होगी.” (ابن عساکر ج ۳۸ ص ۳۰۶) क्यूा आज़ादिये सहाइत एस का नाम है के मुसल्मानों की बे दरेग ईज़्जतें उधाली जायें ! रिश्वतें ले कर इरीके मुकाबिल का हसब नसब भंगाल डाला जाओ ! मुसल्मानों पर जूब जूब तोड़भतें धरी जायें ! मस्खला तो येह है के ईलाम

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दे पाक न पढा तबकी
 वोह बढ भत्त हो गया. (उंज)

तराशी गौर मुस्लिमों पर भी जाँझ नहीं मगर अफ़सोस ! के अब मुसल्मान अेक दूसरे के खिलाफ़ तोड़भतों से भरपूर बयानात दागते और आजादिये सडाइत के नाम पर बा'ज अब्बारात उन्हें आंभें बन्द कर के छापते हैं, जुसूसन इन्तिजाबात के दिनो में बतौरे रिश्वत मिलने वाले यन्द सिक्को की खातिर किसी अेक इरीक से “तरकीब” बना ली जाती है और इरीके सानी पर ज़ु भर कर कीयउ उछाली जाती और उस की भूब भूब पोलें भोली जाती हैं और यू गुनाहों का अेक तवील सिदिसिला यल निकलता है, इन्तिजाबात भत्त हो जाते हैं मगर दुश्मनियां बाकी रह जाती हैं.

औसी ખબર શાએઅ ન ફરમાએ જો ફિતને જગાએ

प्यारे प्यारे सडाइ ईस्लामी भाईयो ! अद्लाउ وَجَلَّ دُنْيَا की दौलत की डिर्स से डमारी डिइजत करे, डमें मुसल्मानों में इतिने इैलाने वाला बनने से बया कर अम्नो अमान का दाई बनाअे. आमीन. सट करोड अफ़सोस के बसा अवकात जान भूऊ कर औसी खबरें भी छाप दी जाती हैं जो मुसल्मानों में इतिना व इसाद और बुरा यरया इैलने का बाईस बनती हैं, औसा करने वाले को अद्लाउ وَجَلَّ دُنْيَا से डरना और अपनी भौत को याद करना याडिये. यटपटी खबरों से अगर अब्बार की यन्द कोपियां बिक भी गई और दुन्या की जलील दौलत में कदरे इजाइ हो भी गया तब भी इन से कब तक इअेदा उठाअेंगे ? इन्हें कब तक आअेंगे ? आखिर इस दारे ना

करमाने मुस्तफ़ा : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर दस भरतबा सुब्द और दस भरतबा शाम दुइदे पाक पढा।
(उसे कियामत के दिन मेरी शक़ात मिलेगी. (अ. १०/१))

पाखेदार में कब तक गुलछरें उडाअंगे ? याद रभिये ! आभिर कार आप जनाब को अंधेरी कब्र में उतरना ही है, और कमा तद्विन तुदान (या'नी जैसी करनी वैसी भरनी) से साबिका पडना ही है. भुरा यरया झैलाने के अजाब से डरने और दिल् में भौंके आभिरत पैदा करने के लिये अेक आयते करीमा और अेक हदीसे मुभा-रका मुला-हजा डो : पारह 18 सू-रतुनूर आयत नम्बर 19 में अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ का इरमाने ईब्रत निशान है :

انَّ الَّذِينَ يُجُونَ أَنْ تَشِيخَ التَّر-ज-मअे क-जुल ईमान : वोड लोग जो याहते हैं के मुसल्मानों में भुरा यरया झैले उन के लिये दईनाक अजाब है दुन्या और आभिरत में.

हदीसे पाक में है : “इतना सोया हुवा होता है उस पर अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की ला'नत जो ईस को बेदार करे.”

(الجامع الصغير للسيوطي ص 370 حديث 970)

सन्सनी भैज भबरें झैलाना

ईस बात पर जिस कदर अइसोस किया जाअे कम है के आज कल भा'ज सहाइयों का काम ही सिई अइवाहें उडाना और सन्सनी भैज भबरें झैलाना रह गया है. उन की तमाम तर कोशिश येही छोती है के किसी तरह घरों में घुस कर लोगों के सन्सनी झैलाने वाले जाती हावात मा'लूम करें छो सके तो भतौर सुभूत झोटो ली बना दें और उन की आम तशहीर कर के उन्हें बे आभइ करें, मुसल्मानों को अेक दूसरे से मु-तनकिईर करें और लडाअें, अब ईन का सभ से बडा कारनामा जासूसी रह गया है, भबरें तो जासूसी,

करमाने मुस्तफ़ा: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा ठिक छुवा और उस ने मुज पर दुरद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبدالرزاق)

मजामीन तो जसूसी और कलानियां तो वोह भी जसूसी.
अदलाह तआला हम मुसल्मानों को अेक दूसरे की ँज्जत
का मुहाफ़िज बनाअे और ँनों जलानों में सुर्ष-रू करे.

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
وَاللَّهُ أَعْلَمُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ عَزَّ وَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ—

अप्लाक ँों अख्ठे मेरा किरदार ँो सुथरा

महबूब का सदका तू मुजे नेक बना दे

(वसाँले बज्शिश, स. 106)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

सहाफ़ियों का कुरेद कर बातें ँगलवाना

सुवाल: अगर सहाफ़ी मौकअ ब मौकअ घरों पर जा कर “कुरेद”
नहीं करेंगे तो कौम तक सहीह अह्वाल कौन पछोंयाअेगा !

जवाब: कौम को हर सत्ह के लोगों के बिगैर किसी हुदूद व कुयूद के
मआँब (या'नी अैबों) से बा ँबर करने की आभिर ँाजत
ही क्या है? किसी अेक आध कौमी व अवामी मस्अले से
मु-तअद्लिक बतौरे ँास कोँ अेक आध तहकीक शुदा बात
बयान करने की तो ँज्जत ँो सकती है लेकिन हमारे ँां ज़ो
कुँ ँोता है वोह कुँ ढका ँुपा नहीं. याद रभिये के किसी के
जाती मुआ-मलात की टोह में पउने और उन की “छान
कुरेद” करने की शरीअत ने मुमा-न-अत फ़रमाँ है. युनान्थे
पारह 26 सू-रतुल हुजुरात आयत 12 में ँर्शाँ ँोता है :

وَلَا تَجَسَّسُوا

तर-ज-मअे क-जुल ँमान: और अैब
न ढूंओ.

करमाने मुस्तकी على الله تعالى عليه واله وسلم : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीफ पडेगा में क्रियामत के दिन उस की शक्रामत कइगा. (क्रामल)

मुसल्मानों की औबजूध न करो

ईस खिस्सअे आयते मुकदसा के तहत सदरुल अफ्जिल हजरते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْإِهْدَى “अजाईनुल ईरफान” में इरमाते हैं : “या’नी मुसल्मानों की औबजूध न करो और ईन के छुपे डाल की जुस्त-जू में न रडो जिसे अल्लाह तआला ने अपनी सत्तारी से छुपाया. उदीस शरीफ में है : गुमान से बयो गुमान बडी जूटी बात है और मुसल्मानों की औबजूध न करो, ईन के साथ खिर्स व हसद, बुग़्ज, बे मुरव्वती न करो, औ अल्लाह तआला के बन्दो ! भाई बने रडो जैसा तुम्हें हुकम दिया गया, मुसल्मान मुसल्मान का भाई है, उस पर जुल्म न करे, उस को रुस्वा न करे, उस की तहकीर न करे, तक्वा यहां है, तक्वा यहां है, तक्वा यहां है, (और “यहां” के लफ्ज से अपने सीने की तरफ ईशारा इरमाया) आदमी के लिये येड बुराई अहुत है के अपने मुसल्मान भाई को हकीर देभे, हर मुसल्मान, मुसल्मान पर हराम है, उस का भून ली, उस की आबरू ली, उस का माल ली. “अल्लाह तआला तुम्हारे जिस्मों और सूरतों और अ-मलों पर नजर नही इरमाता लेकिन तुम्हारे दिलों पर नजर इरमाता है.”¹ उदीस शरीफ में है : जो बन्दा दुन्या में दूसरे की पर्दा पोशी करता है अल्लाह तआला रोजे क्रियामत उस की पर्दा पोशी इरमायेगा.²”

(अजाईनुल ईरफान, स. 950, मक-त-अतुल मदीना)

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर दुरुद पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है.
(अबुयुसुफ़)

.....तो तुम उन को झाओअ कर ढोगे

हज़रते सख़्खिदुना अमीरे मुआविया رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : में ने नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का येह एशदि मुअज़्ज़म फ़ुद सुना है : **إِنَّكَ إِنْ أَتَيْتَ عَوْرَاتِ النَّاسِ أَفْسَدْتَهُمْ** - “अगर तुम ने लोगों के (पोशीदा) उयूब तलाश किये तो तुम उन को तबाह कर ढोगे.” (अबुदाउदज व ६३७ ३०६ हदिथ ६८८८)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार भान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْغَنَّانِ एस हदीसे पाक के तहत्त फ़रमाते हैं : झाहिर येह है के एस फ़रमाने आली में भिताब फ़ुसूसी तौर पर जनाबे मुआविया (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) से है यूँके आयन्दा येह सुल्तान बनने वाले थे, तो उस गुयूब दां मडभूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पडले ही उन को तरीकअे सल्तनत की ता'लीम दी के तुम बादशाह बन कर लोगों के फ़ुफ़या उयूब न हूँढा करना, दर गुज़र और हत्तल एम्कान अफ़वो करम से काम लेना और हो सकता है के इअे सुभन सब से हो के बाप अपनी जवान औलाद को, भावन्द अपनी बीवी को, आका अपने मा तहत्तो को हमेशा शक की निगाह से न ढेभे. बह गुमानियों ने घर बडके बस्तियां बडके मुल्क उज़ाउ डाले. (मिरआत, ज़ि. 5, स. 364, मुप्तसरन)

करमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुज पर दुर्रद पढो के तुम्हारा दुर्रद मुज तक पहुँचता है. (ब्रान)

औब नू जुद रुस्वा होगा

हुजूर नबिय्ये करीम, रउीकुर्रहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ का इरमाने अजीम है : “अै वोह लोगो जो जभान से तो इमान लाअे हो मगर जिन के हिलो में अभी तक इमान दाखिल नहीं हुवा ! न तो मुसल्मानों की गीबत करो और न ही उन के पोशीदा औब तलाश करो क्यूंके जो मुसल्मानों के पोशीदा औब तलाश करता है अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस के औब जाहिर इरमा देगा और अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ जिस के औब जाहिर इरमा दे तो वोह उसे जलीलो रुस्वा कर देगा अगरे वोह अपने घर के अन्दर बैठा हुवा हो.”

(ابوداؤد ج १ ص ३०६ حديث १८८०)

प्यारे प्यारे सडाई इस्लामी भाईयो ! अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की जात औबों से पाक है, अम्बियाअे किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام और मलाअेका नकाईस (या'नी आभियों) से पाक और मा'सूम हैं, बाकी हम जैसे गुनहगार तो सरासर औबदार हैं. येह तो अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ का करम है के उस ने हमारे औबों पर पर्दा डाला हुवा है, वोह याहता है के उस के बन्दे भी अेक दूसरे का पर्दा इाश न करें लेकिन जो बाज नहीं आता और दूसरों को जलीलो प्वार करने की घात में लगा रहता है अद्लाह عَزَّ وَजَلَّ उसे भी दुन्या व आभिरत में जलील कर देता है हत्ता के उस के वोह औब भी जाहिर कर देता है जो उस ने अपने अहले जाना से छुपा रभे थे और इस तरह वोह अपने घर वालों की नजरों से भी गिर जाता है और इर इस की औलाद तक इस का अेहतिराम नहीं करती.

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज़ पर दस भरतभा दुर्रदे पाक पढा अल्लाह عزوجل उस पर सो
रहभते नाज़िल करमाता है. (طرائف)

मुसल्मानों के औब ढूँडना मुनाफ़िक का काम है

उज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन मनाज़िल
رحمة الله تعالى عليه ने फ़रमाया : يا'नी
मोमिन तो अपने मुसल्मान भाईयों का उज़र तलाश
करता है وَالْمُنَافِقُ يَطْلُبُ غَثَرَاتِ إِخْوَانِهِ "जब के मुनाफ़िक
अपने भाईयों की ग-लतियां ढूँडता फ़िरता है."
(شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٧ ص ٥٢١ حديث ١١١٩٧) मतलब येह के ईमान की
अलामत लोगों के उज़र कबूल करना है जब के उन की
ग-लतियां तलाश करना निफ़ाक की निशानी है.

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَرَسُوْلُهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ-

किसी की भामियां देखें न मेरी आंभें और

सुनें न कान भी औंभों का तज़क़िरा या रभ

(वसाधले बफ़िशिश, स. 99)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

बदकारी की जबर लगाना कैसा ?

सुवाल : बदकारी के मुल्गामीन की अब्बार में जबरें लगाने के बारे
में आप क्या कहते हैं ?

जवाब : इन जबरों का मौजूदा अन्दाज़ उभूमन गैर मोहतात और गुनाहों
भरा होता है. गन्दी जबरों का बा'ज अब्बारों में बा काँधदा
सिस्त्रिला यलाया जाता है, मुल्गाम और मुल्गामा की तसावीर
शाअेअ की जातीं और जूब हया सोज़ भातें लिखी जाती हैं
और येह यकीनन ना जाँहज है. और इस तरह बसा अवकात
मुल्के पाकिस्तान के "कानूने मत्बूआत व सहाईत" की भी

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर ओक बार दुइदे पाक पढा अल्लाह रज़ुओ उस पर दस रउमतें भेजता है. (مسلم)

पिलाइ वर्री की जाती है. दफ़्आ 24 के तइत जिन 15 शिक्को का बयान है उस की शिक नम्बर (3) और (7) मुला-हजा हो : (3) तशदुद या जिन्स से तअल्लुक रअने वाले जराईम की औसी इदाद जिस से गैर सिइहत मन्दाना तजस्सुस या नकल का अयाल पैदा होने का ईम्कान हो (7) गैर शाईस्ता, इंडूश, दुश्नाम आभेज या इत्क आभेज मवाद की ईशाअत.

ज़िना का शर-ई सुभूत

येह बात भूब जेइन् नशीन कर लीजिये के किसी को जानी और जानिया साबित करना निहायत दुश्वार अत्र है. ईस के शर-ई सुभूत की सूरत येह है के या तो वोह फुद ईकरार करे या इर यार औसे आदिल गवाह याहिअें जिन्हों ने आंभों से ज़िना होते देखा हो. मगर ईतनी बात पर भी उन पर “इद” जारी नहीं हो सकती जब तक काज़ी मुफ्तलिइ सुवालात कर के हर तरह से ईत्मीनान न कर ले. अल गरज ज़िना के शर-ई सुभूत में काई बारीकियां हैं, जो बिगैर शर-ई सुभूत के किसी पाक दामन मुसल्मान को जानी या जानिया कहे या लिभे वोह सप्त गुनहगार और अजाबे नार का इकदार है.

लोहे के 80 कोडों की सज़ा

ईस ज़िम्न में ओक दिल् खिला देने वाली रिवायत सुनिये और भौंके फुदा वन्दी से थर-थराईये ! युनान्ये दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 1182 सइहात पर मुश्तमिल किताब, “अडारे शरीअत जिल्द 2” सइहा 394 पर है : (इअरते)

करमाने मुस्तक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ॐ शम्स मुअ पर दुइडे पाक पठना भूल गया वोड जन्तत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

अब्दु रज़्ज़ाक (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) (साय्यिहुना) एकरमा (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) से रिवायत करते हैं, वोड कइते हैं : ओक औरत ने अपनी बांटी को जानिया कइ। अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने इरमाया : तूने जिना करते देखा है ? उस ने कइ : नहीं। इरमाया : कसम है उस की जिस के कब्जे में मेरी जान है ! कियामत के दिन इस की वजह से लोहे के अस्सी⁸⁰ कोडे तुजे मारे जायेंगे। (مُصَنَّفُ عَبْدِ الرَّزَّاقِ १ ج ص ३२० رقم १८११)

(पुसूसान सहाइयों से म-दनी इस्तिजा है : मक-त-भतुल मदीना की मत्बूआ बहारे शरीअत जिल्द 3 के अन्दर शामिल डिस्सा 9 में जिना, तोहमत, शराब नोशी वगैरा के इिकडी अइकामात मुला-इजा इरमा लीजिये اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात में इजाइा डोगा और भौंके पुदा में तरककी डोगी)

وَاللهُ اعْلَمُ وَرَسُولُهُ اعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ -

दे पुदा ऐसी नजर जो भूबियां देखा करे

भामियां देभे न अस अख्ठाईयां देखा करे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इश्तिहारात के बारे में म-दनी इल

सुवाल : अब्बारात आम तौर पर इश्तिहारात ही की आमदनी से चलते हैं, इस जिम्न में कुछ म-दनी इल दे दीजिये.

जवाब : अब्बारात में इश्तिहारात छापने जाईज हैं बशर्ते के जानदार की तस्वीर या कोई और मानेअे शर-ई न डो. जादू टोना करने वालों, सूदी ईदरों, भिलाई शर-अ अकसात पर कारोबार

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جِس کے پاس میرا لڑکھ لہوا اور اُس نے موز پر دڑدے پاک نہ پدا تہذکیک
 વોહ બદ બપ્ત હો ગયા. (ઉંબ)

કરને વાલોં, ગુનાહોં ભરી લોટરિયોં, ગૈર ઈસ્લામી અકાઈદ
 પર મબ્ની કિતાબોં, નીઝ ગૈર મુસ્લિમોં કે મઝહબી તહવારોં
 કી મુબારક બાદિયોં વગૈરા પર મુશ્તમિલ ઈશ્તિહારાત ન
 છાપે જાએં. આજ કલ એડવર્ટઈઝમેન્ટ મેં અક્સર ઝૂટ યા
 ઝૂટી મુબા-લગા આરાઈ સે કામ લિયા જાતા હૈ, અખ્બારાત
 વાલોં કો ઈસ તરહ કે ઈશ્તિહારાત છાપને સે ભી બચના
 ઝરૂરી હૈ, મ-સલન જા'લી યા નાકિસ યા જિન દવાઓં સે
 શિફા કા ગુમાને ગાલિબ નહીં હૈ ઉન કે બારે મેં ઈસ તરહ કી
 સુખી : “સો ફી સદી શર્તિયા ઈલાજ” યેહ ઝૂટા મુબા-લગા
 હૈ, બલ્કે એસે જુમ્લે તો કિસી ભી દવાઈ કે બારે મેં નહીં કહને
 ચાહિએં ક્યૂંકે હર તબીબ જાનતા હૈ કે તિબ સારે કા સારા
 ઝન્ની હૈ, કિસી ભી દવા કે બારે મેં યકીન કે સાથ યેહ નહીં
 કહા જા સકતા કે ઈસ સે શિફા હો હી જાએગી. બે શુમાર
 વોહ અમરાઝ જિન કે મુઆ-લજાત દરયાફત હો યુકે હૈં,
 ઉન્હીં અમરાઝ મેં ઈલાજ કી તમામ મુજર્બ સૂરતેં આઝમા
 લેને કે બા વુજૂદ રોઝાના બે શુમાર મરીઝ દમ તોડ દેતે હૈં,
 યેહ ઈસ બાત કી વાઝેહ દલીલ હૈ કે કોઈ ભી દવા એસી
 નહીં જિસ કે ઝરીએ શિફા મિલના યકીની હો. શિફા સિર્ફ
 મિન જાનિબિલ્લાહ હૈ. બહર હાલ અખ્બારાત મેં ગુનાહોં
 ભરે ઈશ્તિહારાત શાએઅ કરના ગુનાહ હૈ, સિર્ફ જાઈઝ
 ઈશ્તિહારાત છાપે જાએં. ફુરઆને કરીમ, પારહ 6 સૂ-રતુલ
 માઈદહ આયત નમ્બર 2 મેં ઈશાદિ રબ્બુલ ઈબાદ હૈ :

करमाने मुस्तक़ा. صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस भरतबा सुबह और दस भरतबा शाम दुरुदे पाक पढा (उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (रुतबा).)

وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ وَلَا
تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ

العِقَابِ ۝

तर-ज-मअे क-जुल ईमान : और
नेकी और परहेज गारी पर अेक दूसरे
की मदद करो और गुनाह और
जियादती पर बाहम मदद न दो
और अद्लाह से डरते रहो बेशक
अद्लाह का अजाब सप्त है.

وَاللَّهُ أَعْلَمُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ عَزَّ وَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ-

बन्दे पे तेरे नफ़से लई हो गया मुडीत
अद्लाह ! कर एलाज मेरी हिसीं आज का

(जौके ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

फ़िल्मी छशितहारात

सुवाल : फ़िल्मी छशितहारात के बारे में भी कुछ रोशनी डाल दीजिये.

जवाब : फ़िल्मों डिरामों और म्यूजिक शो वगैरा के छशितहारात अपने
अब्बारात में देना गुनाह व हराम और जहन्नम में ले
जाने वाला काम है, अैसे छशितहारात के जरीअे मिलने
वाली उजरत भी हराम है. छस तरह के छशितहारात देभ
कर जितने लोग वोह फ़िल्म या डिरामा देभेंगे या म्यूजिक शो
में शरीक होंगे उन सब को अपना अपना गुनाह मिलेगा
जब के उन सब के मजमूअे के बराबर गुनाह अब्बार के
मादिकों और छस में छशितहार डालने के जिम्मेदारों को
मिलेंगे. म-सलन छशितहार के जरीअे आगाही पा कर दस
हजार अफ़राद ने फ़िल्म देभी तो मजकूरा अब्बार वालों

करमाने मुस्तकी صلى الله تعالى عليه واله وسلم : जिस के पास मेरा ठिक हुवा और उस ने मुज पर दुरद शरीक न पढा उस ने जका की. (عبارت)

को दस हजार गुनाह मिलेंगे.

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَرَسُولُهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ -

सरवरे दी! लीजे अपने ना तुवानों की ખબર

नइसो शैतां सय्यिदा ! कब तक दबाते जायेंगे

(हदाईके बअिशाश शरीक)

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلٰى مُحَمَّدٍ

अब्बारी मजामीन कैसे हों ?

सुवाल : अब्बार के मजामीन कैसे होने याहियें ?

जवाब : ईस्लाम के रंग में रंगे हुअे, अह्लाह व रसूल मउब्बत कुलूब में बेदार करने वाले, सहाबा व अहले बैते किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ और औलियाअे ईजाम رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के ईशक से हिलों को सरशार करने वाले, नेकियों से प्यार हिलाने और गुनाहों से बेजार करने वाले मजामीन अब्बार में होने याहियें. अैसे मौजूआत कलम बन्द किये जायें के पढने वाले नमाजी और सुन्नतों के पाबन्द बनें, वालिदैन की ईताअत का दर्स दें और उन का आपस में भाईयारे और मउब्बत व उषुवत का जेहून बने. मगर सद करोड अइसोस ! अैसा नही, अकसर अब्बारात, हईत रोजे और माहनामे झीइश, लयर और मुअरिबुल अह्लाक मजामीन और ईशकिया व क्किशकिया तहरीरात से पुर होते हैं. उन्हें पढ कर लोग दीन से मजीद दूर होते, नित नअे गुनाहों की रगबत पाते और योरियों, उकेतियों के नअे नअे गुर सीपते हैं.

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा मैं कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा. (कोब्राल)

उ-लमा व मशाएष की किरदार कुशी

प्यारे प्यारे सडाई ईस्लामी भाईयो ! अद्वालह عَزَّوَجَلَّ हमें उ-लमाअे अहले सुन्नत के कदमों में रभे और बरोजे हशर ईन्हीं के जुमरे में उठाअे. आमीन. ई जमाना तो औसा लगता है के भा'ज अप्बार वालों को उ-लमा व मशाएष और मजहबी शकलो शबाहत से जैसे थिड हो ! जहां किसी मजहबी ईद या मस्जिद के ईमाम या मुअज़्ज़िन वगैरा की किसी ખता की तनक कान में पडी, उसे हाथों हाथ लिया और उस मजहबी ईद की तज़लील और किरदार कुशी का कई दिन तक के लिये भा काईदा अेक सिस्सिला यला दिया ! हां किसी आमिल व बाबा या'नी ता'वीज गन्डे देने वाले की बूल सामने आने और शर-ई सुबूत मिल जाने की सूरत में उस ईद पास के शर से लोगों को बयाने के लिये उस के मु-तअद्लिक बयान करना दुरुस्त है और ईसी तरह ईस कबील (या'नी किस्म) के दूसरे जूटे लोगों और ठगों से मोहतात रहने का भशवरा देना भी बहुत मुनासिब है लेकिन येह हरगिज हरगिज ज़ाईज नही के उसे "नकली पीर" करार दे कर हकीकी उ-लमा व मशाएष को बदनाम करने की मजभूम तरकीबें शुर्अ कर दें, हावां के हर ता'वीजात देने वाला पीरी मुरीदी नही करता, आमिल होना और थीज है और पीर होना और.

भा'ज कोलम निगारों के कारनामे

भा'ज "कोलम निगार" भी निहायत बेबाकी के साथ शर-ई मुआ-मलात में दपील होते और ईस्लामी अकदार

करमाने मुस्तफ़ा : حَسْبِيَ اللهُ عَلَيْهِ وَالْوَالِدَاتُ : मुज पर दुरदे पाक की कसरत करो भशक येह तुम्हारे लिये तदारत है।
(अल-बक़र)

को पामाल करते नजर आते हैं, नीज जिस की याहते हैं अपने क़ौलम के ज़रीअे ँज़्ज़त उधालते और उस की आभरू की धज्जियां बिभेर देते हैं और जिस पर “भेहूरभान” हो जाते हैं वोह अगर्ये पापी समाज में पलने वाला गन्दी नाली का कीडा ही क्यूं न हो उसे “हीरो” बना देते हैं !

गुनाहों भरी तहरीर मरने के भा'द गुनाह जारी रख सकती है

भीठे भीठे सडाई ईस्लामी भाईयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सभ से सदा के लिये राज़ी हो और हमें बे हिसाब भप्शे. आमीन. हर अक को येह जेहून नशीन कर लेना याहिये के जिस बात का ज़भान से अदा करना कारे सवाब है उस का कलम से लिखना भी सवाब और जिस का बोलना गुनाह उस का लिखना भी गुनाह है बल्के बोलने के मुकाबले में लिखने में सवाब व गुनाह में ँजाई का ज़ियादा ँम्कान है मकूल है : **أَلْخَطُّ بَاقٍ وَالْغُمْرُ فَانٍ** या'नी “तहरीर (ता देर) बाकी रहेगी और और उम्र (जल्द) इना हो जायेगी” भहर डाल तहरीर ता देर काँम रहती और पढी जाती है, वोह जब तक दुन्या में बाकी रहेगी लोग उस के अख्छे या भुरे अ-सरात लेते रहेंगे और लिखने वाला ज्वाह इँत हो युका हो उस के लिये सवाब या अज़ाब में ज़ियादती का सिद्धिसिला जारी रहेगा. गुनाहों भरी तहरीर मरने के भा'द भी बाकी रह कर पढी जाती रहने की सूरत में गुनाह जारी रहने का भौइनाक तसव्वुर ही **भौंई भुदा** रहने वाले मुसल्मान का होश उडाने के लिये काई है !

करमाने मुस्तकी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतभा दुरदे पाक पढा अल्लाह उंस पर सो रलमतें नाजिल करमाता है. (प्रां.)

दीनी हामियत तू मुजे रब्बे करीम दे
उर अपना, शर्म, अपनी दे कल्बे सलीम दे

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मजमून निगार के लिये म-दनी कूल

सुवाल : मजमून निगार के लिये कुछ म-दनी कूल धर्शादि हों.

जवाब : जब भी किसी मजमून या तहरीर की तरकीब करनी हो उस वक्त सब से पहले अपने दिल से सुवाल करे के मैं जो लिखने लगा हूँ उस की शर-ध हैसियत क्या है ? धस पर सवाब भी मिलेगा या नहीं ? कहीं ऐसा तो नहीं के गुनाहों भरी बातें लिख कर दुन्या में छोड जाओं और कब्रों आभिरत में इंस जाओं ! अल गरज तहरीर से कबल उस के दीनी व उप्परी इवाधद और दुन्यवी जाधज मनाइअ के मु-तअद्लिक पूब सोय ले, जइरतन उ-लमाअे किराम से मश्वरा कर ले. जब शर-ध और अप्लाकी हवाले से मुकम्मल धत्मीनान हासिल हो जाअे तो अब रिजाअे धलाडी पाने और सवाब कमाने के लिये अख्शी अख्शी नियतें कर के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का नाम ले कर कलम संभाले.

ओक मुसन्निफ़ की हिंकायत

जाहिल (जो के मो'तजिली इर्के का मुसन्निफ़ गुजरा है उस) को मरने के बा'द किसी ने प्वाब में देष कर पूछा : क्या मुआ-मला

इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शप्स है. (ज़िरीय)

हुवा ? बोला : “अपने कलम से सिर्फ़ ऐसी बात लिखो जिसे कियामत में देख कर पुश हो सको.”

(احياء العلوم ج ٥ ص ٢٦٦)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَرَسُولُهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ-

हे तमीज़ अच्छे बले की मुज़ को ऐ रब्बे गकूर

में वोही लिखूं करे जो सुर्ष-रू तेरे हुज़ूर

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

सुनी सुनाई बात में आ कर किसी को गुनहगार कहना

सुवाल : किसी शप्स के बारे में कोई बुराई की खबर अवाम में मशहूर हो जाये तो उसे छापा जा सकता है या नहीं ?

जवाब : सिर्फ़ इस बुन्याद पर नहीं छाप सकते. इरमाने मुस्तफ़ा

كَفَى بِالْمَرْءِ كَذِبًا أَنْ يُحَدِّثَ بِكُلِّ مَأْسَمِعٍ - : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

या'नी किसी इन्सान के जूटा होने को येही काफ़ी है के वोह हर सुनी सुनाई बात (बिला तहकीक) बयान कर दे.

(مُقَدِّمَةٌ صَحِيح مُسْلِم ٨ حَدِيث ٥)

शोहरत हो जाना उस के गुनहगार होने की हरगिज़ दलील नहीं. मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले

सुन्नत, मुजदिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम

अहमद रज़ा खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने इतावा र-जविय्या

जिल्द 24 सफ़हा 106 ता 108 पर ज़बर दस्त ह-नई

आलिम हज़रते अद्लामा आरिफ़ बिदलाह नासेह

क़िल्लाह सय्यिदी अब्दुल गनी नाबुलुसी سِرَّةُ الْقَدْسِي का

तवील इशाह नकल किया है उस के अेक हिस्से का खुलासा

ਕਰਮਾਨੇ ਮੁਸਤੱਕ: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: ਉਸ ਸ਼ਾਪਸ ਕੀ ਨਾਕ ਪਾਕ ਆਲੂਦ ਛੋ ਜਿਸ ਕੇ ਪਾਸ ਮੇਰਾ ਤਿਕ ਛੋ ਔਰ ਵੋਹ ਮੁੜ ਪਰ ਫੁੜਦੇ ਪਾਕ ਨ ਪਏ. (ਮਾਂ)

ਛੈ : ਕਿਸੀ ਕੋ ਸਿਫ਼ ਈਸ ਵਜ਼ਹ ਸੇ ਗੁਨਾਹਗਾਰ ਕਹਨਾ ਜਾਈਝ ਨਹੀਂ ਕੇ ਭਹੁਤ ਸਾਰੇ ਲੋਗ ਉਸ ਕੀ ਤਰਫ਼ ਗੁਨਾਹ ਮਨਸੂਬ ਕਰ ਰਹੇ ਛੋਂ ਔਰ ਯੂੰ ਭੀ ਆਜ ਕਲ ਲੋਗੋਂ ਮੇਂ ਭੁਝਝੋ ਕੀਨਾ ਔਰ ਹਸਦ ਵ ਝੂਟ ਕੀ ਕਸਰਤ ਛੈ. ਆ'ਝ ਅਵਕਾਤ ਆਦਮੀ ਜਹਾਲਤ ਵ ਲਾ ਈਲਮੀ ਕੇ ਸਬਭ ਭੀ ਕਿਸੀ ਪਰ ਈਲਾਮ ਰਖ ਦੇਤਾ ਛੈ ਔਰ ਲੋਗੋਂ ਮੇਂ ਈਸ ਕਾ ਤਝਕਿਰਾ ਭੀ ਕਰ ਦੇਤਾ ਛੈ ਔਰ ਲੋਗ ਭੀ ਉਸ ਕੇ ਹਵਾਲੇ ਸੇ ਆਗੇ ਭਯਾਨ ਕਰ ਦੇਤੇ ਹੈਂ. ਸੁਫਾ ਸੁਫਾ ਯੇਹ ਖਭਰ ਕਿਸੀ ਐਸੇ ਸ਼ਾਪਸ ਤਕ ਜਾ ਪਹੋਂਚਤੀ ਛੈ ਜੋ ਕੇ ਅਪਨੇ ਈਲਮ ਪਰ ਮਗੜਰ ਔਰ ਝਲੇ ਖੁਫਾ ਵਨਦੀ ਸੇ ਫੂਰ ਛੋਤਾ ਛੈ, ਵੋਹ ਲਾ ਈਲਮੀ ਕੇ ਸਬਭ ਭਯਾਨ ਕਰਦਾ ਉਸ “ਗੁਨਾਹ” ਕਾ ਭਿਲਾ ਕਿਸੀ ਤਹਕੀਕ ਈਸ ਤਰਹ ਤਝਕਿਰਾ ਕਰਤਾ ਛੈ ਕੇ ਮੁਝੇ ਯੇਹ ਖਭਰ ਤਸਲੂਲ ਕੇ ਸਾਥ ਮਿਲੀ ਛੈ. ਛਾਲਾਂ ਕੇ ਜਿਸ ਕੀ ਤਰਫ਼ ਗੁਨਾਹ ਕੀ ਨਿਸਬਤ ਕੀ ਜਾ ਰਹੀ ਛੋਤੀ ਛੈ ਉਸ ਗਰੀਬ ਕੋ ਖਵਾਭ ਮੇਂ ਭੀ ਈਸ ਭਾਤ ਕੀ ਖਭਰ ਨਹੀਂ ਛੋਤੀ ! ਮਝੀਫ ਝਰਮਾਤੇ ਹੈਂ : “ਜਭ ਕਿਸੀ ਸ਼ਾਪਸ ਸੇ ਭ ਤਰੀਕੇ ਤਵਾਤੁਰ ਯਾ ਮੁਸ਼ਾ-ਹਫਾ (ਯਾ'ਨੀ ਆਂਘੋਂ ਦੇਖਾ) ਗੁਨਾਹ ਸਾਭਿਤ ਭੀ ਛੋ ਜਾਐ ਤਭ ਭੀ ਈਸ ਕਾ ਈਝਛਾਰ ਭਨਦ ਕਰ ਦੇ ਕਯੂੰਕੇ ਲੋਗੋਂ ਮੇਂ ਭਤੌਰੇ ਗੀਭਤ ਕਿਸੀ ਕੇ ਗੁਨਾਹ ਕਾ ਤਝਕਿਰਾ ਹਰਾਮ ਛੈ ਈਸ ਲਿਯੇ ਕੇ ਗੀਭਤ ਸਝਝੀ ਭੀ ਹਰਾਮ ਛੈ.”

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَرَسُولُهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ-

ਐਘੋਂ ਕੋ ਐਭ ਜੂ ਕੀ ਨਝਰ ਫੁੰਡਤੀ ਛੈ ਪਰ
ਹਰ ਖੁਸ਼ ਨਝਰ ਕੋ ਆਤੀ ਛੈ ਅਝਥਾਈਯਾਂ ਨਝਰ
صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

इरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोऊ ज़ुमुआ दो सो बार दुरदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अमाल)

क्या हर ખબર છાપને સે કબ્લ ખૂબ તહકીક કરની હોગી ?

સુવાલ : તો ક્યા હર ખબર છાપને કે લિયે ખૂબ તહકીક કરની હોગી ?

જવાબ : એસી જાઈઝ વ બે ઝરર ખબર જો કિસી ફર્દ યા કૌમ યા ઈદારે વગેરા કી મઝમ્મત યા મઝર્ત યા મઝલ્લત પર મબ્ની ન હો, જિસ મેં કિસી કિસ્મ કી શર-ઈ ખામી યા ફિતને યા અમ્ને આમ્મા મેં ખલલ કા શાએબા ન હો, અપને મુલ્ક કા કોઈ કાનૂન ભી ન ટૂટતા હો, કમઝોર કૌલ મિલને પર ભી છાપી જા સકતી હૈ. અલબત્તા લા યા'ની ખબરોં, ગૈર મુફીદ નઝમોં ઔર ફુઝૂલ મઝમૂનોં ઔર બેકાર ચુટકુલોં સે બચના મુનાસિબ હૈ. ફરમાને મુસ્તફા صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ :
 يَا'ની ફુઝૂલ બાતેં તર્ક કર દેના ઈન્સાન કે ઈસ્લામ કી ખૂબી સો હૈ.

(ત્રમઝી જ ૬; વ ૪૮૦) ૧૮૮૦ (હદિથ ૨૩૨૦) ઠા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ 63 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ, “બેટે કો નસીહત” સફહા 9 તા 10 પર હુજ્જતુલ ઈસ્લામ હઝરતે સય્યિદુના ઈમામ અબૂ હામિદ મુહમ્મદ બિન મુહમ્મદ બિન મુહમ્મદ ગઝાલી رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ઈરમાતે હેં :
 એ પ્યારે બેટે ! હુઝૂર નબિય્યે કરીમ, રઊફુરુદ્દીમ عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ ને અપની ઉમ્મત કો જો નસીહતેં ઈશાદિ ફરમાઈ ઉન મેં સે એક મહક્તા મ-દની ફૂલ યેહ (ભી) હૈ :

“બન્દે કા ગૈર મુફીદ કામોં મેં મશગૂલ હોના ઈસ બાત કી અલામત હૈ કે અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ને ઈસ સે અપની નઝરે ઈનાયત ફેર લી હૈ ઔર જિસ મકસદ કે લિયે બન્દે કો પૈદા કિયા ગયા હૈ અગર ઉસ કી ઝિન્દગી કા એક લખ્હા

करमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर दुःख शरीफ़ पढो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा.

(अबुयू)

त्मी उस के धलावा (या'नी उस मकसद से हट कर) गुज़र गया तो वोह (बन्दा) धस बात का हकदार है के उस की हसरत तवील हो जाये और जिस की उम्र 40 साल से ज़ियादा हो जाये और धस के बा वुजूह उस की बुराधियों पर उस की अस्थाधियां गालिब न हों तो उसे जहन्नम की आग में जाने के लिये तय्यार रहना चाहिये.”
(औ बेटे !)
(تفسير روح البيان، سورة بقره، تحت الاية : ٢٣٢، ج ١، ص ٣٦٣)
समजदार और अकल मन्द के लिये धतनी ही नसीहत काई है.

गो येह बन्दा निकम्मा है बेकार धस से ले इज़ल से रब्बे गइफ़ार
काम वोह जिस में तेरी रिज़ा है या फ़ुदा तुज़ से मेरी दूआ है

(वसाधले बज्शिश, स. 135)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

शैतान अइवाह डसता है

सुवाल : उउती हुध जबर मिली के कुलां कुलां ग्रूप आपस में मु-तसादिम हो गये हैं और बाहम लडाध छिउ गध है औसी जबरें धापना कैसा ?

जवाब : औसी जबरें तो मुसदका (या'नी तस्दीक शुदा) हों तब त्मी धापने में नुकसान के सिवा कुध नहीं के उमूमन धस तरह हंगामे बढते और जान व माल की हलाकतों और बरबादियों में धजाइा होता है. “अम्ने आम्मा में जलल डालने की कोशिश” पर मब्नी जबरें तो फ़ुद हमारे मुल्की कानून के त्मी जिलाइ हैं. रही उउती हुध जबर जिसे “अइवाह” कहते हैं, धस पर तो अ'तिमाद करना ही नहीं चाहिये, औसी अइवाहें शैतान त्मी

इरमाने मुस्तक़ा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : मुज़ पर कसरत से दुरुदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुरुदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मफ़िरत है. (बाय़्)

ईन्सान की शकल में आ कर उडाता है. युनान्चे हज़रते (सय्यिदुना) ईब्ने मसूद (رضى الله تعالى عنه) इरमाते हैं: “शैतान आदमी की सूरत ईप्तियार कर के लोगों के पास आता है और उन्हे किसी जूटी बात की ખबर देता है. लोग झैल जाते हैं तो उन में से कोई कहता है के मैं ने अेक शप्स को सुना जिस की सूरत पडयानता हूं (मगर) येड नहीं जानता के उस का नाम क्या है, वोड येड कहता है.” (مقدمه مسلم ص ۹)

कियामे पाकिस्तान के इरान भा'द अइवाड के सभभ डोने वाला इसाद मुइस्सिरे शडीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुइती अहमद यार ખान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْاَحْقَان مज़कूरा रिवायत के ईस डिस्से, “فَيَحْدِثُهُمْ بِالْحَدِيثِ مِنَ الْكُذِبِ” (तरजमा: “उन्हे किसी जूटी बात की ખबर देता है”) के तह्त इरमाते हैं: (या'नी) “किसी वाकिअे की जूटी ખबर या किसी मुसल्मान पर बोहतान या इसाद व शरारत की ખबर जिस की अस्ल (या'नी हकीकत) कुछ न डो.” मुइती साहिब ईस रिवायत के तह्त मज़ीद इरमाते हैं: हदीस बिडकुल आहिरी मा'ना पर है किसी तावील की ज़रत नहीं, येड बारडा (का) तजरिबा है. (युनान्चे) माहे र-मज़ान की सत्ताईसवीं तारीख जुमुआ के दिन या'नी 14 अगस्त 1947 सि.ई. को पाकिस्तान बना. ईदुल इत्र के दिन नमाजे ईद के वक्त तमाम शहरों बडके देहातों (तक) में खबर उड गई के सिख मुसल्लह डो कर ईस बस्ती पर हम्ला आवर डो रहे हैं (और) करीब डी आ युके हैं! हर घर हर महल्ले हर जगह शोर मच गया, लोग तय्यारियां कर के निकल आअे. डालां के बात

करमाने मुस्तफ़ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज़ पर अक दुइद शरीफ़ पढता है अदलाउ उरुउ उस के लिये अक कीरात अज्ज लिपता है और कीरात उदुद पछांड जितना है. (मिर्जात)

गलत थी हर जगह लोगों ने (येही) कहा के “अमी अक आदमी कह गया है खबर नहीं कौन था !” फिर जो फ़साद शुरू हुआ वोह सब ने देख लिया, जुदा की पनाह ! इस (हदीसे पाक में दी हुई खबर) का सुदूर छोता रहता है. शैतान छुप कर भी दिलों में वस्वसा डालता रहता है और ज़ाहिर हो कर शकले इन्सानि में नुमूदार हो कर भी. लिहाज़ा हर खबर बिगैर तहकीक नहीं फैलानी चाहिये. इस का मतलब येह भी हो सकता है के कभी शैतान आलिम आदमी की शकल में आ कर (भी) जूटी हदीसों बयान कर जाता है, लोगों में वोह जूटी हदीसों फैल जाती हैं. इस लिये हदीस को किताब में देख कर अस्नाद वगैरा मा’लूम कर के बयान करना चाहिये. मुफ़्ती साहिब बयान कर्दा हदीसे मुभारक के मु-तअद्लिक इरमाते हैं : अगर्ने इरमान उजरते इब्ने मरउिद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का है मगर “मरफूअ हदीस” के हुकम में है के ऐसी बात सलाबी अपने खयाल या राय से बयान नहीं इरमा सकते हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) से सुन कर ही कह रहे हैं. (मिर्जात, ज़ि. 6, स. 477) इस हदीसे पाक और इस की शर्ह से उन लोगों को भी दर्स हासिल करना चाहिये, जो मोबाइल फ़ोन पर s.m.s के ज़रीअे मौसूल होने वाली तरह तरह की हदीसों दूसरों को फ़ोरवर्ड करते (या’नी आगे बढाते) रहते हैं. छावां के इन में कई अहादीस “उसूले हदीस” से मु-तसादिम और मौज़ूअ या’नी मन घडत होती हैं ! लिहाज़ा इन हदीसों को और इसी तरह अप्भारात वगैरा में शाअेअ कर्दा अहादीस

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس نے کیتاબ میں موزن پر دھڑکے پاک لکھا تو جب تک میرا نام اُس میں
 رહેگا کیریتے اُس کے لیے اِستغفار کرتے رہےگے. (ابن ماجہ)

કો ભી ઉ-લમાએ કિરામ કે મશવરે કે બિગૈર ન બયાન કરે
 ન હી કિસી કો s.m.s કરે ક્યૂંકે ગૈર મોહતાત તરજમોં કી
 ભરમાર ઓર બે એહતિયાતી કા દૌર દૌરા હૈ.

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَرَسُولُهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ -

લબ હમ્દ મેં ખુલે, તેરી રહ મેં કદમ ચલે

યા રબ ! તેરે હી વાસિતે મેરા કલમ ચલે

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

તરદીદી બયાન કા તરીકા

સુવાલ : અગર કિસી અપ્પાર મેં કિસી કે નામ સે કોઈ કાબિલે
 તરદીદ મઝમૂન યા બયાન શાએઅ હુવા હો તો ઉસ કી
 તરદીદ કા કયા તરીકા હોના ચાહિયે ?

જવાબ : તરદીદ મેં ફુલાં શખ્સ ને યેહ કહા હૈ યા બયાન દિયા હૈ
 વગૈરા ન છાપા જાએ બલકે સિર્ફ ઉસ અપ્પાર કે નામ
 પર ઇક્તિફા કિયા જાએ કે “ફુલાં અપ્પાર યા હફત
 રોઝે યા માહનામે ને એસા લિખા હૈ.” મઝમૂન નિગાર
 યા જિસ કી તરફ બયાન મન્સૂબ હૈ ઉસ કી ઝાત પર
 હરગિઝ હમ્લા ન કિયા જાએ, ક્યૂંકે અપ્પાર યા માહનામે
 વગૈરા મેં કિસી કા નામ શાએઅ હો જાના “શર-ઈ
 દલીલ” નહીં. મુઝે (સગે મદીના ﷺ કો) ખુદ તજરિબા
 હૈ કે બા’ઝ અવકાત મેરી તરફ સે એસી બાતેં અપ્પાર

करमाने मुस्तफ़ी عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَسْمُ : जिस ने मुज पर ओक बार दुइटे पाक पढा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर दस रउमतें भेजता है. (स)

में आ जाती हैं जिन का मुजे पता तक नहीं होता ! ओक बार मैं ने किसी आदिम साहिब से उन की तरफ़ मन्सूब गैर जिम्मेदाराना अब्बारी बयान के मु-तअद्लिक इस्तिस्सार किया तो कुछ इस तरह जवाब मिला : “मैं ने इस तरह नहीं कहा था, सहाई ने झोन किया था और अपनी मरजी से कुलां जुम्ला बढा दिया.” बसा अवकात किसी की तरफ़ मन्सूब कर के उस की मरजी के खिलाफ़ औसा बयान छाप दिया जाता है जिस की तरदीद करने में इतिने का अन्देशा होता है और यूं वोह भूब आजमाईश में आ जाता है. म-सलन किसी मुल्क का गैर मुस्लिम सदर मर गया, किसी की तरफ़ से ता’जियती बयान डाल दिया गया और उस में मरने वाले को “मर्दूम” लिख दिया या उस के लिये “दुआअे मर्गिरत करना” मन्सूब कर दिया तो तरदीद का मरहला बडा नाज़ुक है. यहां येह मस्अला भी समज लीजिये के किसी गैर मुस्लिम या मुरतद को मरने के बा’द मर्दूम कहने वाले या उस के लिये दुआअे मर्गिरत करने वाले या उसे जन्नती कहने वाले पर हुकमे कुफ़्र है. (माजूज़न बहारे शरीअत, जिहद अव्वल, स.185) सट करोड अइसोस ! कई अब्बारात में इस तरह के कुफ़्रियात बिला तकल्लुफ़ छाप दिये जाते हैं ! इसी तरह कोई ना पसन्दीदा

करमाने मुस्तक़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : श्री शप्स मुज पर दुइदे पाक पढना बूल गया वोड जन्तत का रास्ता
बूल गया. (अरान)

शप्स ईकित्तदार पर आ गया और किसी की तरफ़ से
ज्वाह म ज्वाह मुबारक बाद का पैगाम और हुआईया
कलिमात छाप दिये गये, बेयारा तरदीद कैसे करेगा ?
बहर डाल ! अब्जार वालों को नाप तोल कर लिखना
और उ-लमाअे किराम की रहनुमाई के साथ चलना जरूरी
है वरना कुफ़्रियात लिख देने से ईमान के लाले पड सकते
हैं. किसी ने बयान न दिया हो उस की तरफ़ से कस्दन जूटा
बयान छाप देना भी गुनाह और अगर बयान दिया हो
मगर उस में अपनी तरफ़ से औसी गैर वाजिबी तरमीम
कर देना जो जूट मानी जाअे वोड भी गुनाह है.

मुज को छिक्मत का पजाना या ईलाही कर अता

और चलाने में कलम कर दे तू मडकूज अज पता

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

जेडीटर को कैसा होना चाहिये ?

सुवाल : अब्जार और टीवी येनल के मालिक व मुदीर (Editor)
और डायरेक्टर को कैसा होना चाहिये ?

जवाब : T.V. येनल, अब्जार, हफ़त रोज़ा, माहनामा वगैरा के
मालिकान, मुदीरान व जिम्मेदारान को ईल्मे दीन के जेवर
से आरास्ता होना चाहिये या कम अज कम “मोहतात
फ़िदीन हों” और उ-लमाअे किराम के मा तहत रहते हुअे

इरमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदें पाक न पढा तलकीक वोह बढ भप्त हो गया. (उंन)

उन से रहनुमाई हासिल कर के येनल यलाते या अब्बार वगैरा निकालते हों, येह लोग अगर एल्मे दीन से आरी, भौंके जुदा से ખाली, आजाद ખयाल और “बे लगाम” हुअे तो उन का येनल, अब्बार या माहनामा वगैरा मुसल्मानों के लिये बे अ-मली बल्के गुमराही का आला साबित हो सकता है.

अल्लाह ! इस से पहले ईमां पे मौत दे दे

नुकसां मेरे सभब से हो सुन्ते नबी का

(वसाएले बज्शिश, स. 195)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

लोगों के हालात की मा'लूमात रचना

सुवाल : लोगों के मौजूदा हालात से बा खबर रहने में कोई मुजा-यका तो नहीं ?

जवाब : ज़ाएज उराअेअ से मुझीद व ज़ाएज मा'लूमात हासिल करने में कोई मुजा-यका नहीं, बल्के अख़री निय्यतें हों तो सवाब मिलेगा. “शमाएले तिरभिजी” में हज़रते सय्यिदुना हिन्द बिन अभी हाला رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत कर्दा अेक तवील हदीस में येह भी है के النَّاسِ فِي النَّاسِ وَيَسْأَلُ النَّاسَ عَمَّا فِي النَّاسِ يَتَفَقَّدُ أَصْحَابَهُ وَيَسْأَلُ النَّاسَ عَمَّا فِي النَّاسِ يَا'नी शहनशाहे ખैरुल अनाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सहाबअे

करमाने मुस्तफ़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर ओक बार दुइडे पाक पढा अल्लाह उस पर दस रउमतें भेजता है. (स्ल)

किराम रِضْوَانِ عَلَيْهِمُ के डालात की मा'लूमामत इरमाते और लोगो में डोने वाले वाकिआत के मु-तअद्लिक इस्तिफ़सारात (या'नी पूछगछ) करते. (شَمَائِلُ تِرْمِذِي ص ۱۹۲) डजरते अल्लामा अली कारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي इस डडीसे पाक के तइत इरमाते हैं : या'नी सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जो सडामअे किराम रِضْوَانِ عَلَيْهِمُ डालिर न डोते उन के बारे में दरयाफ़त इरमाते, अगर कोई भीमार डोता तो उस की इयादत इरमाते या कोई मुसाफ़िर डोता तो उस के लिये दुआ करते, अगर किसी का इन्तिकाव डो जाता तो उस के लिये मग़िरत की दुआ इरमाते और लोगो के मुआ-मलात की तडकीकात कर के उन की इस्लाह इरमाते. (جمع الوسائل ج ۲ ص ۱۷۷)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ وَرَسُوْلُهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ -

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

अभरें मा'लूम करने की अखी अखी नियतें

सुवाल : अभरें मा'लूम करने के लिये क्या क्या अखी नियतें डोनी याडिअें ?

जवाब : डर जाइज काम से कडल डरबे मौकअ अखी अखी नियतें कर लेनी याडिअें. किसी इडके बारे में जाइज मा'लूमामत डालिसल करने में इस तरड नियतें डी जा सकती हैं. म-सलन इस के बारे में अखी अभर सुनूंगा तो مَا شَاءَ اللهُ، بَارَكَ اللهُ

करमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : श्री शप्स मुज पर दुइटे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (क्रान)

कहूंगा, इस का दिल पुरश करने के लिये मुबारक बाद पेश करूंगा, अगर येह परेशान हुवा तो तसल्ली दे कर इस की दिलजूई करूंगा. मुम्किन हुवा तो इस की हमदाह करूंगा, ज़रतन अर्र्हा मश्वरा दूंगा, सफ़र पर हुवा तो दुआ करूंगा. भीमार हुवा तो ईयाहत या दुआअे शिफ़ा या दोनों दूंगा. वगैरा.

ખબર મા'લૂમ કરને કી નિરાલી હિકાયત

કિસી કી ખૈર ખબર મા'લૂમ કરને પર અગર વોહ હાજત મન્દ ઝાહિર હો તો મુમ્કિના સૂરત મેં ઉસ કી મદદ કરની ચાહિયે.

“કીમિયાઅે સઆદત” મેં હૈ : સય્યિદુલ મુઅબ્બિરીન હઝરતે સય્યિદુના ઈમામ મુહમ્મદ ઈબ્ને સીરીન عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ السُّبِين ને એક આદમી સે પૂછા : ક્યા હાલ હૈ ? જવાબ દિયા : (બહુત બુરા હાલ હૈ કે) કસીરુલ ઈયાલ હૂં, (યા'ની બાલ બચ્ચે ઝિયાદા હૈ) અખરાજાત પાસ નહીં, ઊપર સે 500 દિરહમ કા કર્ઠદાર ભી હૂં, યેહ સુન કર હઝરતે સય્યિદુના ઈમામ મુહમ્મદ ઈબ્ને સીરીન عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ السُّبِين અપને ઘર તશરીફ લાઅે, એક હઝાર દિરહમ ઉઠાઅે ઔર ઉસ દુખ્યારે કે પાસ આઅે ઔર સારે દિરહમ ઉસે અતા ફરમાઅે ઔર ફરમાયા : 500 દિરહમ સે કર્ઠ અદા કીજિયે ઔર 500 ઘર કે ખર્ચ મેં ઈસ્તિ'માલ ફરમાઈયે. ફિર આપ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ને અહ્દ કિયા કે “કિસી

करमाने मुस्तका على الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइद पाक न पढा तलकीक वोड भद भप्त हो गया. (उंन)

से डाल नहीं पूछूंगा.” छुज्जतुल ईस्लाम डउरते सय्यिदुना
 एमाम अबू डामिद मुडम्मद बिन मुडम्मद बिन मुडम्मद गजाली
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي يَهُد خِذَايَت نكल करने के बा'द इरमाते हैं :
 “डउरते सय्यिदुना एमाम मुडम्मद एब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي
 ने इस षौइ से आयन्दा किसी से डाल दरयाइत न करने का
 अडूद किया के अगर षुद पूछ कर षबर मा'लूम करने के बा'द
 मैं ने उस की मदद न की तो पूछने के मुआ-भले में मुनाइक
 डडूंगा.” وَاللَّهِ اعْلَمُ وَرَسُولُهُ اعْلَمُ عَزَّ وَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ -
 (कियाई سعادت, ज १ व ६०८) अड्लाड एज्र वजल की उन पर रडमत
 हो और उन के सदके डमारी बे हिसाब मगिरत हो.

اميين بجاة النَّبِيِّ الْأَمِين صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मुझे दै षुद को भी और सारी दुन्या वालों को
 सुधारने की तडप और डौसला या रब

(वसाएले बजिश, स. 96)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

अप्पार पढना कैसा ?

सुवाल : अप्पार बीनी करना कैसा ?

जवाब : जो अप्पार शर-ई तकाजों के मुताबिक हो उसे पढना ज़ाईज
 है और जो अप्पार औसा नहीं उस का मुता-लआ सिई उस के
 लिये ज़ाईज है जो बे पदा औरतों की तसावीर और इल्मी

इरमाने मुस्तक। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा सुब्द और दस मरतबा शाम दुइटे पाक पढा
उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्रात मिलेगी. (अ. १०/१)

ईशितहारात के इंड्रश मनाजिर वगैरा से निगाहों की
छिड़कत पर कुदरत रખता हो, गुनाहों त्मरी तहरीरात
वगैरा बिला ईज्जते शर-ई न पढता हो. बा'ज अप्पारात
में बसा अवकात वाहियात व पुराफात के साथ साथ गुमराह
कुन कलिमात बल्के कल्मी तो **اللَّهُمَّ اكْفِ عَنِّي** कुइय्यात तक लिभे
होते हैं ! जैसे अप्पारात पढने वाले के भयालात में जो
इसादात पैदा हो सकते हैं वोह हर बा शुउिर शप्स समज
सकता है. यहां येह बात अर्ज करता यलूं अगर कल्मी क्रिसी
आदिमे दीन बल्के आम आदमी को त्मी अप्पार बीनी
करता पाअें तो हरगिज **बद गुमानी** न इरमाअें बल्के जेइन्
में हुस्ने उन जमाअें के येह शर-ई अेहतियातों को मल्लूज
रખते हुअे मुता-लआ कर रहे होंगे. आम आदमी के लिये
ऐसा अप्पार जो गुनाहों त्मरा हो उसे पढने के दौरान फुद
को मा'सियत व गुमराही से बयाना निहायत मुश्किल है
और यूँके बा'ज अवकात गैर मोहतात अप्पारात की तहरीरात
में कुइय्यात त्मी होते हैं ईस लिये ईन का मुता-लआ **اللَّهُمَّ اكْفِ عَنِّي**
कुइ के गहरे गढे में जा पडने का सबभ त्मी बन सकता है. रहे
कुइफार के अप्पार तो उन की तरफ तो आम मुसल्मान को
देखना त्मी नहीं याहिये के जब मुसल्मानों के कई अप्पार बे
कैदी का शिकार हैं तो उन का क्या पूछना ! जाहिर है उन में
तो कुइय्यात की त्मरमार होगी और वोह अपने बातिल

इरमाने मुस्तक। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ठिक हुवा और उस ने मुज पर दुरद शरीक न पढा उस ने जका की. (عبدالرزاق)

मजहब का परचार भी करते होंगे. बहर हाल मुसल्मान को सिर्फ अब्बार भीनी ही नहीं हर काम के आगाज से कबल उस के उपरवी अन्जाम पर गौर कर लेना चाहिये और हर उस काम से बचना चाहिये जिस में आभिरत के बिगाड का अन्देशा हो. याद रखिये ! “बनाना” बहुत मुश्किल है जब के “बिगाडना” निहायत आसान. देखिये ! मकान बनाना किस कदर दुश्वार काम है मगर एसे गिराना हो तो आन की आन में गिरा दिया जाता है ! एसी तरह लिपना या नकशा वगैरा बनाना मुश्किल उसे बिगाड देना निहायत आसान, इरनीयर बनाना मुश्किल उसे तोड डोड कर बिगाडना आसान, पाना पकाना मुश्किल पके हुअे को बिगाडना आसान, किसी को करीब कर के दोस्त बनाना बहुत मुश्किल मगर दो लफ्ज म-सलन “दइअ हो जा !” कह कर दोस्ती बिगाड देना बिदकुल आसान, अब्बार को मुप्तलिफ मराहिल से गुजार कर झार्नल करना फिर छापना वगैरा मुश्किल मगर झड कर बिगाड देना आसान, एसी तरह आभिरत को भी समजिये के एसे बेहतर बनाने के लिये भूब एबादत व रियाजत करनी, हर गुनाह से बचना और प्वाहिशाते नइसानी मारनी होती हैं जब के बिगाडना निहायत आसान है जैसा के शैतान ने लाखों साल एबादत कर के अक मकाम हासिल किया था मगर तकब्बुर के बाईस नबी की तौहीन

इरमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ पढेगा मैं कियामत के दिन उस की शक्राअत करुंगा. (अबुअल)।

कर के लम्हे त्तर में आभिरत बिगाड ली और हमेशा हमेशा के लिये जहन्नमी हो गया. “अद्लाहु कदीर عَزَّوَجَلَّ कदीर” से लरजा भर अन्दाभ रहते हुअे हर मुआ-मले में आभिरत की त्तराई की तरफ नजर रचना हर मुसल्मान के लिये जरूरी है. पारह 28 सू-रतुल उशर आयत नम्बर 18 में इरमाने ईलाही है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ
وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ

तर-ज-मअे कन्तुल ईमान : औ ईमान वालो ! अद्लाह से उरो और हर जान दृषे के कल के लिये क्या आगे त्तेजा.

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आभिरत बना ले
कोई नहीं लरोसा औ त्ताई ! जिन्दगी का

(वसाईले बज्शिश, स. 195)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

सहाई कहीं आप के मुजालिफ न हो जअें

सुवाल : आप को लगता नहीं के आप के ईस तरह के जवाबात से सहाई उजरात आप के मुजालिफ हो जाअेंगे ?

जवाब : मैं सिर्फ अद्लाह عَزَّوَجَلَّ से उरने वाले मुसल्मानों से मुजातिब हूं, मैं ने जो कुछ अर्ज किया है मेरा हुस्ने उन है के कल्मे सलीम रचने वाला हर भा जभीर सहाई उस को दुरुस्त तस्लीम करेगा. मैं ने मुल्क व मिल्लत और

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइडे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तहारत है.
(अबुसली)

आभिरत की त्वाएँ की बातें ही तो अर्ज की हैं, जब शरीअते
 ईस्लामिया से उट कर बल्के मुल्की कानून के त्मी जिलाइ कोई
 क्लाम नहीं किया तो कोई मुसल्मान सडाईी मुज से क्यूं
 ईप्तिलाइ करने लगा ! नइस की हीला बाजियों में आ कर,
 गैर शर-ई मस्लहतों को आउ बना कर मेरी तरइ से पेश
 कर्दा भैर ज्वाहाना ईस्लामी अलकामात की मुभा-लइत कर
 के कोई मुसल्मान अपनी आभिरत क्यूं जिगाडेगा ! हां जुदा
 न ज्वास्ता में ने कोई बात मुल्की कानून से टकराने वाली या
 जिलाइ शरीअत कर दी है तो बराअे करम ! कानूनी और
 शर-ई दलाईल के साथ मेरी ईस्लाह इरमा दीजिये मुजे
 अपने मौकिइ पर जिला वजह अउता नहीं إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ
 शुक्रिया के साथ रुजूअ करता पाअेंगे. बेशक में मानता हूं के
 बे राह-रवी का दौर दौरा है और पानी सर से उींचा डो
 युका है ईस लिये शायद मेरी येह ईद्लिजअें सदा ब सहरा
 बन कर ही रह जाअें और येह त्मी कुछ बईद नहीं के कोई
 नादान दोस्त, अधूरी बातें सुन कर या सुनी सुनाई बातों में
 आ कर मुज से “इठ” ही जाअे. अैसों के लिये मैं सिई किसी
 का येह शे’र ही पढ सकता हूं :

उम “दुआ” लिभते रहे वोह “दगा” पढते रहे

अेक नुक्ते ने उमें “महरम” से “मुजरिम” कर दिया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : توم જહાં ભી હો મુઝ પર દુરુદ પઢો કે તુમહારા દુરુદ મુઝ તક પહોંચતા હૈ. (ત્રાઉ)

अप्पार कैसे होना चाहिये

सुवाल : अप्पार निकालना ज़रूरी है या नहीं ? अगर ज़रूरी है तो अप्पार कैसे होना चाहिये ? इस की ईशाअत के लिये कुछ म-दनी इल दे दीजिये.

जवाब : अप्पार निकालना ज़रूरी है. मुसल्मान हर मुआ-मले में शर-ई अहकामात के मा तहूत है और अप्पार के मुआ-मले में भी इसे शरीअत की पासदारी करनी होगी. ખબરદાર ! अप्पार का मुआ-मला निहायत नाज़ुक है, मा'भूली सी बे अहत्तियाती मुसल्मानों को इतना व इसाद, आपसी बुजुओ ईनाद, गुनाह व मआसी बढे गुमराही व ईल्लाह के गार में धकेल कर बरबाद कर सकती है और इस का उप्परी वबाल अप्पार के मालिकान व जिम्मेदारान पर आ सकता है. ईन ખतरात से बचने के लिये 16 म-दनी इल (जिन में जिम्नन मुळे पाकिस्तान की कानूनी शिकें भी शामिल हैं) कबूल इरमाईये.

❶ मुदीर पारसा व मोहतात आलिमे दीन हो या बा अमल उ-लमाअे किराम की मजलिस के मा तहूत काम करने वाला.

❷ उ-लमाअे किराम हर हर ખबर, मुरा-सला, नज़्म, कौलम, आर्टीकल और ईश्तिहार वगैरा ब नज़रे गाईर अव्वल ता आभिर पढ कर, तन्कीह व तईतीश इरमा कर ईजाज़त बप्शें तब अप्पार (या माहनामा वगैरा) ईशाअत के लिये प्रेस में जाअे.

﴿ 3 ﴾ **इरमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुइदे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रउमते नाज़िल इरमाता है. (طبرانی)

﴿3﴾ किसी इर्दे मुअय्यन या बरादरी की मज्मत औब-दरी और धजा रसानी पर मुश्तमिल ખબરें बिला धजाते शर-ध शाओअ न की जाओं.

﴿4﴾ औसा शप्स जिस के शर से मुसल्मानों को बयाना मकसूद हो और इतने और अम्ने आम्मा में खलल का अन्देशा न हो तो सवाब की नियत से उस का नाम और उस में मौजूद सिर्फ़ पास उस खराबी की धशाअत कर दी जाओ जो मुसल्मानों के लिये मुज़िर हो. **इरमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : क्या इाज़िर के जिक से बयते हो उस को लोग कब पढयानेंगे ! इाज़िर का जिक उस बीज के साथ करो जो उस में है ताके लोग उस से बयें. (अल्सन्नू क़ुबरी लिलिहैतु ज १० व ३०६ हदित २०१६)

﴿5﴾ किसी शप्से मुअय्यन की काम्याब या नाकाम खुदकुशी की खबर न शाओअ की जाओ.

﴿6﴾ किसी बद मज्जब का बयान या मज्मून वगैरा शर-ध अग्लात से पाक हो तब भी न धापा जाओ के धस का ओक नुक्सान येह भी हो सकता है के कारिधन उस बद मज्जब से मु-तआरिफ़ होने के साथ साथ उस की शप्सियत से मु-तअस्सिर हो सकते हैं जो के धमान के लिय जहरे हलाहल है. याद रहे ! इसादे अकीदा इसादे अमल से ब द-र-जहा बदतर है.

﴿7﴾ किसी “सियासी पार्टी” से गठजोड कर के उस के मा तह्त न रहा जाओ के जूटी खुशामद, इरीके मुखालिफ़ की बे जा मुखा-लइत, औब-दरी, धल्जाम तराशी और मुसल्मानों की धजा

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس کے پاس میرا ٹیک ڈો اور વોલ મુજ પર દુરુદ શરીફ ન પઢે તો વોલ લોગોં મેં સે કન્જુસ તરીન શપ્સ હૈ. (તૈબરીય)

રસાની વગૈરા વગૈરા ગુનાહોં સે બચના કરીબ બ ના મુમ્કિન હો જાએગા ઓર મા તહ્તી કે બાઈસ ઐસે અખ્બાર કી “આઝાદિયે સહાફત” ખુદ બખુદ ખત્મ હો જાએગી !!!

❸ ઉન ખબરોં ઓર બયાનાત કી ઈશાઅત ન કી જાએ જિન સે મુસલ્માનોં મેં ઈન્તિશાર હો યા વતને અઝીઝ કે વકાર કો ઠેસ પહોંચે.

❹ મુલ્કી રાઝ ઈફ્શા ન કિયે જાએ.

❺ કલમ તખ્રેબી નહીં સિર્ફ વ સિર્ફ તા’મીરી અન્દાઝ મેં ચલાયા જાએ ઓર તહરીરોં કે ઝરીએ મુસલ્માનોં કો નેક કામ ઓર ગૈર મુસ્લિમોં કો દીને ઈસ્લામ કે કરીબ કિયા જાએ.

❻ અપને અખ્બાર સે મુન્સલિક અજીર સહાફિયોં પર તહાઈફ ઓર ખુસૂસી દા’વતેં કબૂલ કરને કે હવાલે સે પાબન્દી રખી જાએ કે અક્સર સૂરતોં મેં યેહ રિશવતેં હોતી હૈં ઓર ઈન કી વજહ સે બસા અવકાત મુરવ્વતન ગુનાહોં ભરે બયાનાત વગૈરા કી ઈશાઅત કરની પડ જાતી હૈ !

❼ ફિલ્મ એડીશન, ફિલ્મી સફહા, ફિલ્મોં, સ્ટેજ ડિરામોં ઓર મ્યૂઝીકલ પ્રોગ્રામોં, ના જાઈઝ ચીઝોં ઓર ના જાઈઝ કામોં વગૈરા કે ગુનાહોં ભરે ઈશ્તિહારાત દેને સે કુલ્લી તૌર પર લાઝિમી ઈજતિનાબ (યા’ની પરહેઝ) કિયા જાએ.

❽ ઈલેક્ટ્રોનિક મીડિયા કે ગુનાહોં ભરે પ્રોગ્રામોં કી ફેહરિસ શાએઅ ન કી જાએ.

﴿रमाने मुस्तक﴾ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर हुइदे पाक न पड़े. (रु)

﴿14﴾ शर-ई तौर पर जुर्म साबित हो जाने की सूरत में त्नी यूंके शप्से मुअय्यन की बिला मस्लहत ખબर मुश्तहर करने की शरअन ँजहत नहीँ लिहाजा उस की पर्दा पोशी की जाये और मुक्किना सूरत में निज तौर पर नेकी की दा'वत के जरीये जैसे मुजरिम की ँस्लाह की सूरत निकाली जाये. ढंडोरा पीटने और अप्पारों में ખबरें यमकाने से सुधार के बजाये अक्सर बिगाड पैदा होता है और बसा अवकात जिद में आ कर “छोटा मुजरिम” बडे मुजरिम का रुप धार लेता है !

﴿15﴾ जानदारों की तस्वीरें न छापी जायें (जो उ-लमाये किराम मूवी और तस्वीर में इर्क करते हुये मूवी को जर्ठज कहते हैं उन्हीं के इतवे पर अमल करते हुये दा'वते ँस्लामी “म-दनी येनल” के जरीये हुन्या त्तर में ँस्लाम की बिदमत करने में कोशां है)

﴿16﴾ बेहतर येह है के अप्पार में आयाते कुरआनिया और ँन का तरजमा न छापा जाये क्यूंके जहां आयत या ँस का तरजमा लिखा हो वहां और उस के अैन पीछे बिगैर तहारत के धूना हराम है और अक्सर लोग बे वुजू अप्पार पढते होंगे और मस्अला न मा'लूम होने की वजह से धूने के गुनाह में पडते होंगे.

में तहरिर से हीं का उंका बजा हूं

अता कर दे ऐसा कलम या ँलाही

(वसाँले बश्शिश, स. 83)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

કરમાને મુસ્તફા. عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अमल)

અખ્બાર કે દફતર મેં કામ કરના કેસા ?

સુવાલ : ગુનાહોં ભરે અખ્બાર કે દફતર મેં કામ કરના ઓર અખ્બાર કી છપાઈ વગૈરા મેં મુઆ-વનત કરના કેસા ? તન-ખ્વાહ જાઈઝ હોગી યા ના જાઈઝ ?

જવાબ : ગુનાહોં ભરા અખ્બાર મુકમ્મલ તૌર પર ગુનાહોં ભરા નહીં હોતા, ઈસ મેં જાઈઝ તહરીરાત ભી શામિલ હોતી હેં, અગર સિફ જાઈઝ મઝામીન કી નોકરી હૈ તો જાઈઝ ઓર ઈસ કી તન-ખ્વાહ ભી જાઈઝ ઓર અગર ના જાઈઝ કામ હી કરના પડતા હૈ તો નોકરી ભી ના જાઈઝ ઓર તન-ખ્વાહ ભી ના જાઈઝ. અગર દોનોં તરહ કે કામ કરને પડતે હેં તો જિતના જાઈઝ કામ ક્રિયા ઉસ પર મિલને વાલી ઉજરત જાઈઝ ઓર જિતના ના જાઈઝ કામ ક્રિયા ઉતની ઉજરત ના જાઈઝ. મઝકૂરા દફતર મેં ઐસા કામ કરના જાઈઝ હૈ જિસ મેં ગુનાહ મેં ક્રિસી તરહ સે મદદ ન કરની પડતી હો. મ-સલન ચોકીદારી વગૈરા.

અખ્બાર બેચના કેસા ?

સુવાલ : અખ્બાર બેચના જાઈઝ હૈ યા નહીં ?

જવાબ : વોહ અખ્બાર જો બુન્યાદી તૌર પર ખબરોં પર મુશ્તમિલ હો લેકિન કુછ હિસ્સા હર કિસ્મ કે ઈશ્તિહારાત પર ભી મુશ્તમિલ હો ઉન કા બેચના અખ્બાર ફરોશોં કે લિયે જાઈઝ હૈ ઓર આમદની ભી હલાલ હૈ જબ કે જો અખ્બાર બુન્યાદી તૌર પર

ਫ਼ਰਮਾਨੇ ਮੁਸਤਫ਼ਾ ﷺ : **مُؤَلٌّ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** : ਮੁਝ ਪਰ ਕਸਰਤ ਸੇ ਦੁਰੁਦੇ ਪਾਕ ਪਠੋ ਭੇਸ਼ਕ ਤੁਮਠਾਰਾ ਮੁਝ ਪਰ ਦੁਰੁਦੇ ਪਾਕ ਪਠਨਾ ਤੁਮਠਾਰੇ ਗੁਨਾਹੀਂ ਕੇ ਲਿਯੇ ਮਙਿਰਤ ਹੈ. (ਮੁਸ਼ਫ਼ਹ)

ਫ਼ੋਰਿਸ

ਕੁਝ ਈਸ ਰਿਸਾਲੇ ਕੇ ਭਾਰੇ ਮੇਂ.....		ਮੁਸਲਮਾਨੀਂ ਕੇ ਐਭ ਫ਼ੁੰਡਨਾ ਮੁਨਾਫ਼ਿਕ ਕਾ ਕਾਮ ਹੈ	29
ਦੁਰੁਦ ਸ਼ਰੀਫ਼ ਕੀ ਫ਼ੜੀਲਤ	1	ਭਠਕਾਰੀ ਕੀ ਖ਼ਬਰ ਲਗਾਨਾ ਕੈਸਾ ?	29
ਸਫ਼ਾਫ਼ਤ ਕੀ ਤਾ'ਰੀਫ਼	1	ਜ਼ਿਨਾ ਕਾ ਸ਼ਰ-ਠ ਸੁਭੂਤ	30
ਮੌਯੂਦਾ ਸਫ਼ਾਫ਼ਤ ਕੀ ਦੋ ਕਿਸਮੇਂ	2	ਲੋਠੇ ਕੇ 80 ਕੋਠੀਂ ਕੀ ਸਜ਼ਾ	30
ਦੁਨ੍ਯਾ ਕਾ ਸਭ ਸੇ ਪਠਲਾ ਅਘਾਰ	2	ਠਸ਼ਿਤਠਾਰਾਤ ਕੇ ਭਾਰੇ ਮੇਂ ਮ-ਠਨੀ ਫ਼ੂਲ	31
ਪੁਠਕੁਸ਼ੀ ਕੀ ਖ਼ਬਰੇਂ	3	ਫ਼ਿਲਮੀ ਠਸ਼ਿਤਠਾਰਾਤ	33
ਪਠਲੂਅੀਂ ਸੇ ਗੋਸ਼ਤ ਕਾਟ ਕਰ ਖ਼ਿਲਾਨੇ ਕਾ ਅਜ਼ਾਭ	5	ਅਘਾਰੀ ਮਜ਼ਾਮੀਨ ਕੈਸੇ ਠੀ ?	34
ਪੁਠਕੁਸ਼ੀ ਮੇਂ ਨਾਕਾਮ ਰਠਨੇ ਵਾਲੀਂ ਕੀ ਖ਼ਬਰੇਂ	6	ਠ-ਲਮਾ ਵ ਮਸ਼ਾਠਘ ਕੀ ਕਿਰਦਾਰ ਕੁਸ਼ੀ	35
ਮਾਰੇ ਜ਼ਾਨੇ ਵਾਲੇ ਠਾਕੂਅੀਂ ਕੀ ਮਜ਼ਮਮਤ	8	ਠਾ'ਝ ਕੌਲਮ ਨਿਗਾਰੀਂ ਕੇ ਕਾਰਨਾਮੇ	35
ਵੋਠ ਠਸ਼ ਵਕ਼ਤ ਜ਼ਨਮਤ ਕੀ ਨਠਰੀਂ ਮੇਂ ਗੋਤੇ ਲਗਾ ਰਠਾ ਹੈ	8	ਅੇਕ ਗਲ਼ਤ ਵਠਫ਼ ਠੀ ਕਠੀਂ ਜ਼ਠਨਮ ਮੇਂ ਨ ਠਲ ਠੇ	37
ਘੋਰ ਠਾਕੂ ਕੀ ਗਿਰਿਫ਼ਤਾਰੀ ਕੀ ਖ਼ਬਰੇਂ ਠੇਨਾ	10	ਮਝਮੂਨ ਨਿਗਾਰ ਕੇ ਲਿਯੇ ਮ-ਠਨੀ ਫ਼ੂਲ	38
ਤੂਨੇ ਘੋਰੀ ਕੀ (ਠਿਕਾਯਤ)	11	ਅੇਕ ਮੁਸਲਿਮਿਫ਼ ਕੀ ਠਿਕਾਯਤ	38
ਗਿਰਿਫ਼ਤਾਰ ਸ਼ੁਠਾ ਘੋਰ ਕੀ ਖ਼ਬਰ ਲਗਾਨਾ ਕੈਸਾ ?	13	ਸੁਨੀ ਸੁਨਾਠਠਾਤ ਮੇਂ ਠਾ ਕਰ ਕਿਸੀ ਕੋ ਗੁਨਠਗਾਰ ਕਠਨਾ	39
ਘੋਰ ਸੇ ਠਠ ਕਰ ਮੁਝਰਿਮ	14	ਕਯਾ ਠਰ ਖ਼ਬਰ ਠਾਪਨੇ ਸੇ ਕਠਲ ਪੂਠ ਤਠਕੀਕ ਕਰਨੀ ਠੋਗੀ ?	41
ਮੁਲ਼ਮ ਕਾ ਨਾਮ ਠਾਪਨਾ ਕੈਸਾ ?	15	ਸ਼ੈਤਾਨ ਅਠਵਾਲ ਠਠਾਤਾ ਹੈ	42
ਮੁਸਲਮਾਨ ਕੀ ਠੇ ਠਝਝਤੀ ਕਠੀਰਾ ਗੁਨਾਠ ਹੈ	15	ਕਿਯਾਮੇ ਪਾਕਿਸ਼ਤਾਨ ਕੇ ਫ਼ੌਰਨ ਠਾ'ਠ ਅਠਵਾਲ ਕੇ	43
ਪੁਠਾ ਵ ਮੁਸ਼ਤਫ਼ਾ ਕੋ ਠਝਾ ਠੇਨੇ ਵਾਲਾ	16	ਸਭਠ ਠੋਨੇ ਵਾਲਾ ਠਸ਼ਾਠ	
ਠਠਸ਼ਤ ਗਠੀਂ ਕੀ ਵਾਰਿਠਾਤ ਕੀ ਖ਼ਬਰ ਠਾਪਨੇ ਕੇ ਨੁਕਸਾਨਾਤ	18	ਤਰਠੀਠੀ ਠਯਾਨ ਕਾ ਤਰੀਕਾ	45
ਠਠਸ਼ਤ ਗਠੀਂ ਕੀ ਖ਼ਬਰ ਅਘਾਰ ਕੀ ਜ਼ਾਨ ਠੋਤੀ ਹੈ	19	ਅੇਡੀਟਰ ਕੋ ਕੈਸਾ ਠੋਨਾ ਘਾਲਿਯੇ ?	47
ਸਫ਼ਾਫ਼ਤ ਕੀ ਅਝਾਠੀ	21	ਲੋਗੀਂ ਕੇ ਠਾਵਾਤ ਕੀ ਮਾ'ਵੂਮਾਤ ਰਘਨਾ	48
“ਅਠਠੇ ਠਘਠੇ ਠਰ ਕੀ ਠਾਤ ਠਾਠਰ ਨਠੀਂ ਕਿਯਾ ਕਰਤੇ !”	21	ਘਬਰੇਂ ਮਾ'ਵੂਮ ਕਰਨੇ ਕੀ ਅਠਠੀ ਅਠਠੀ ਨਿਘਠੇਂ	49
ਅੈਸੀ ਘਬਰ ਸ਼ਾਅੇਅ ਨ ਠਰਮਾਅੈਂ ਜ਼ੋ ਠਿਤਨੇ ਜ਼ਗਾਅੇ	23	ਘਬਰ ਮਾ'ਵੂਮ ਕਰਨੇ ਕੀ ਨਿਰਾਲੀ ਠਿਕਾਯਤ	50
ਸਨਸ਼ਨੀ ਪੈਝ ਘਬਰੇਂ ਠੈਲਾਨਾ	24	ਅਘਾਰ ਪਠਨਾ ਕੈਸਾ ?	51
ਸਠਾਠਿਯੀਂ ਕਾ ਕੁਰੇਠ ਕਰ ਠਾਠੇਂ ਠਗਲਵਾਨਾ	25	ਸਠਾਠੀਂ ਕਠੀਂ ਠਾਪ ਕੇ ਮੁਖ਼ਾਲਿਫ਼ ਨ ਠੋ ਜ਼ਾਅੈਂ	54
ਮੁਸਲਮਾਨੀਂ ਕੀ ਐਠਯੂਠ ਨ ਕਰੋ	26	ਅਘਾਰ ਕੈਸਾ ਠੋਨਾ ਘਾਲਿਯੇ	56
.....ਤੋ ਤੁਮ ਠਨ ਕੋ ਝਾਅੇਅ ਕਰ ਠੋਗੇ	27	ਅਘਾਰ ਕੇ ਠਠਠਰ ਮੇਂ ਕਾਮ ਕਰਨਾ ਕੈਸਾ ?	60
ਐਠ ਜ਼ੂ ਪੁਠ ਰੁਸ਼ਵਾ ਠੋਗਾ	28	ਅਘਾਰ ਠੋਯਨਾ ਕੈਸਾ ?	60



الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين أما بعد فأعوذ بالله من الشيطان الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم

सुन्नत की बहारें

अल्लैहम सुन्नत की आलमगीर और सियासी तहरीक छ'वते ईस्लामी के मइके मइके म-दनी माहोल में अ कसरत सुन्नतों सीपी और सिपाई जती हैं, हर जुमा'रात ईरा की नमाज के आ'द आप के शहर में छोने वाले छ'वते ईस्लामी के छकतावार सुन्नतों अरे ईजतिमाअ में रोजाअे ईवाही के लिये अच्छी अच्छी नियतों के साथ सारी रात गुजारने की म-दनी ईजतिअ है. आशिकाने रसूल के म-दनी काकिबों में अ नियते सवाअ सुन्नतों की तरबियत के लिये सकर और रोजाना किंके मदीना के जरीअे म-दनी ईन्आमात का रिसावा पुर कर के हर म-दनी माह के ईज्तिदाई हस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के जिम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, अल्लैहम सुन्नत की अ-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नकरत करने और ईमान की छिकाजत के लिये कुहने का जेहन बनेगा.

हर ईस्लामी भाई अपना येह जेहन बनाअे के "मुजे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की ईस्वाह की कोशिश करनी है. अल्लैहम सुन्नत की कोशिश के लिये "म-दनी ईन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की ईस्वाह की कोशिश के लिये "म-दनी काकिबों" में सकर करना है. अल्लैहम सुन्नत की कोशिश के लिये

मड-त-अतुल मदीना की शाणें

सुरत : वलियाभाई मस्जिद, प्वाज्र दाना दरगाह के पास. 9898615071

जामनगर : पांय छाटडी, 9327977293

मोडासा : सुका अज्जर, 9725824820

गांधीधाम : सपना नगर, मदीना मस्जिद के पास, 8141474279

धोलका : ताजदारे मदीना मस्जिद के सामने, टावर आजार, 9374915797

मड-त-अतुल मदीना

छ'वते ईस्लामी

مكتبة المدينة

सिलेक्टड हाईस, अलिकु डी मस्जिद के सामने, वील दरवाजा, अहमदआबाद-1 मुहरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net